लता होनेसे हमारी स्वतंत्रताका अनुभव बढ़ता जाता है
र हर्ष अधिक अधिक होता है। इसलिये, ऐसा कहनेमें कोई
देह नहीं है कि जितना स्वतंत्रताका अनुभव ज्यादा होगा
नी ही आनन्दकी लहर अधिक बढ़ेगी। यहां तक कि सब
ार के बंधनों, भावों और इरादोंसे पूरी स्वतंत्रताका प्राप्त
ना सबसे अधिक कभी कम न होनेवाले और कभी न
टूलनेवाले समाधिरूपी आत्मिक सुखका कारण होगा। अतः
यह परिणाम निकालते हैं कि जीव स्वयं आनन्द और
स्वादका सोता, निवास व निवासस्थान है और उसके
ानन्दका स्रोत कभी नहीं सूख सकता है। इसका कारण यह है
क यह हर्ष जो हमारे अंदरसे पैदा होता है खुद हमारी ही
त्माका गुण है। क्योंकि आत्मा जैसे अखंड और असंयुक्त
व्यके सम्बंधमें 'अंदर'का भाव और द्वन्द्व हो ही नहीं सकता है।
व चूंकि द्रव्य और उसके स्वाभाविक गुण या विशेषण नित्य
ते हैं इसलिये यह असम्भव है कि यह आनन्द जो आत्माका
गुण है एकबार सम्पूर्णतया अपने रोकनेवाले कारणोंके नाश
ानेपर प्रगट होनेके पश्चात् कभी कम हो सके।

अब हम इन बातको समझ गये हैं कि इच्छाओं और
[illegible] कम होनेपर जिनके कारणसे मनकी शान्ति [illegible]
[illegible] नष्ट हो जाते हैं, क्यों [illegible] होता है [illegible]
और उसके निमित्त यह कहना है कि यह आत्माके बाह्य [illegible]

ानंदका कोप है जिसको वह बाह्य पदार्थोंसे प्राप्त करनेका
क प्रयत्न करता है।
फिर क्या कारण है कि जीव अपने इस स्वाभाविक आनं-
अनुभव नहीं कर सकता है? इस जटिल प्रश्नका उत्तर
कि हमारी त्रुटियों और मूढ़ताके कारणसे जीवात्माके
ाविक गुण कार्यहीन हो गये हैं।
जिस हद तक कि इन त्रुटियों, मूढ़ता या कषायनयकी
में हानि होती है उस हदतक जीवके स्वाभाविक गुण प्रकट
हैं। वास्तवमें जीवात्मा पूर्णानन्द और सर्वज्ञताका अनुभव
ा जब कि वह शक्तियां जो इससमय इन गुणोंको रोके हुये
नितान्त नष्ट हो जावेंगी। और अमरत्व भी जीवके उन
यों पर विजयी होने का पारितोषिक होगा।
जीवको सर्वज्ञ, सुख और अमरत्वका स्वामी कहना उसको
में खुदा या ईश्वर (ब्रह्म) कहना है क्योंकि ईश्वरकी सत्तामें
बड़े गुण यही पाये गये हैं इससे पवित्र इंजीलके इस
न्यका कि "वह पत्थर जिसको मेमारोंने रद्दी समझकर
क दिया निजरका सरताज हुआ है" (देखो जबूर ११८ आयत
२ व मत्तीकी इंजिल बाब २१ आयत ४२) पुरा समर्थन
ता है।
वास्तवमें वही पत्थर आत्मा जिसको मेमारों (प्राकृतिक
ान बनाओ) ने फेंक दिया था वही विज्ञानका छत्र साबित

योंसे उत्पन्न होते हैं और इस कारण हमारे जीवनकी ...
दशायें हैं। यदि इसके विपरीत होता अर्थात् दुःख ...
हमारी सत्ताके गुण होते तो वह हमारी
और कषायोंके हलका और मंद पड़जाने पर उत्पन्न होते
क्योंकि जो पदार्थ किसी वस्तुका गुण है वह स्वयं ...
कारणके ही अपने रोकनेवाले कारणोंके हटजाने पर
हो जाता है। रंज और कष्ट दोनों वाह्य कारणोंसे, ...
निम्नलिखित दो प्रकारके हैं, पैदा होते हैं।

(१) अनिष्टसंयोग अर्थात् मिलाप ऐसी वस्तुसे जो ग्राही नहीं है।

(२) इष्टवियोग अर्थात् पृथकता ऐसे पदार्थसे जो ग्राही और रोचक है।

दुःख और रंज किसी दशामें उस समय नहीं पैदा होते हम अपनी सत्तामें स्थिर हों अर्थात् इन कारणोंमेंसे एक दूसरेके निमित्तके बिना नहीं उत्पन्न होते। वास्तवमें कि शारीरिक दुखका सम्बन्ध ...
प्रकारकी वस्तुओं व प्राकृतिक तत्वोंके बाहमी (आपसके कीमियाई कर्मोका जो शरीरमें होता रहता है प्रभाव है, ...

जीवके अन्दरसे कोई स्वयं उत्पन्न होनेवाला पदार्थ।

उपरान्त व्याख्यासे हम यह कहनेके अधिकारी हैं कि ...

चलता है जिसके प्रभावसे सच्चा धर्म्म (अर्थात् साइन्टिफिक यथार्थ सत्य) हृदयग्राही नहीं हो सकता। यह दो प्रकारकी है। एक तो सत्यको हमें स्वीकार ही नहीं करने देती और दूसरी वह जो सत्यके स्वीकार होने पर भी हमें उस पर कर्तव्यपरायण होनेसे रोकती है। इनमेंसे प्रथम प्रकारकी शक्तियोंका भाव पक्षपात, हठधर्मी, मिथ्यात्व और उन तमाम बुरेसे बुरे (अनंतानुबंधी) कषायों (क्रोध मान माया लोभ) से है जिनकी तीव्रता व उन्मत्तताके कारण बुद्धिको, जो एक ही यन्त्र सत्यान्वेषणका है, सत्यताके खोजका अवसर ही नहीं प्राप्त होता है। और दूसरे प्रकारकी शक्तियोंमें अनंतानुबंधी प्रकारके अतिरिक्त और अन्य प्रकारके बुरे कषाय (क्रोध मान माया लोभ) सम्मिलित हैं जो धैर्य्य और वीर्यके नाश करनेवाले हैं और उन पदार्थोंके ग्रहण करनेमें बाधक होते हैं जिनको हम लाभकारक और उत्तम जानते और कुछ छोटे २ दोष (नोकषाय) जैसे हँसी रति इत्यादि शारीरिक आदतें व कामनाएं भी जो मनको काबूमें लानेमें क होते हैं। यह सब मोहनीय कर्म्म कहलाते हैं इनके दो र हैं।

१—दर्शनमोहनीय, जिनकी उपस्थितिमें सत्य धर्म (दर्शन) प्राप्त नहीं हो सकता है। और

२—चारित्रमोहनीय, जो सत्य धर्मको तो प्राप्त हो जाने देते हैं किंतु उस पर कर्तव्य परायण नहीं होने देते हैं।

तब यह प्रकृतिके लगावका प्रभाव है जो
अवस्थाओंका जिम्मेवार है जो एक पवित्र आत्मामें नहीं
क्योंकि विविध द्रव्यों या तत्त्वोंके आपसमें मिल
जानेका परिणाम उनके असली गुणोंका सीमित हो
दब जाना ही हुआ करता है जैसे हाइड्रोजेन
जेन जो नैसर्गिक दो प्रकारकी वायु हैं परन्तु जब
एक हो जाती हैं तो इनके स्वाभाविक गुण
में परिवर्तित हो जाते हैं। परन्तु इस प्रकार गुण
नहीं हो सक्ते हैं। पदार्थोंके पृथक् होने पर यह पुनः पूरे
समर्थताको प्राप्त हो जाते हैं (देखो इंडियन
रिव्यू पत्र १५५)। गौर करनेसे ज्ञात होता है कि अपवित्र
अपने ज्ञान, दर्शन व आनन्दके असीमित गुणोंका पूरा
नहीं उठा सक्ता है जिससे प्रकट है कि इन गुणोंको
वाली शक्तियां उसके साथ लगी हुई हैं। इस प्रकार
किसकी शक्तियोंका पता चलता है। अर्थात्

१-वह शक्ति जो ज्ञानको रोकती है (यह
कहलाती है)।

२-वह जो दर्शनको रोकती है (दर्शनावरणीय) और

३-वह शक्तियां जिनके कारण वास्तविक
सांसारिक दुख सुखका अनुभव हुआ करता है (वेदनीय)।

इनके अतिरिक्त विचार करने पर एक और शक्तिका

बराबर कठिन करते जाओ। कभी हलका न होने दो।
ढील डालनेसे लाभ नहीं है क्योंकि सम्भव है
ऐसा करनेके लिये समय ही न मिले। चाहे वह
उपवास या कोई और नियम मनके मारनेका हो,
सबके शत्रुके परास्त करनेकेलिये अपनी ओर
चाहिये। आराम कुर्सी पर लेट कर मुक्तिकी प्राप्ति
करनेकी आशा निरर्थक है। इस प्रकार कर्मोंके बन्धन नहीं
सकते हैं। अभीसे अपने तईं सरगरमीके साथ
नाश करनेके लिये तैयारी करना प्रारम्भ करो। अन्यथा
बिल्ली या कीड़े मकोड़ेकी भांति आगामी जन्म पाने या
कठिनसे कठिन दुख भोगनेके लिये कि जो ...
कषायोंमें लगनेके विपाक हैं तैयार हो जाओ।

अतः अब कोई चौड़ा राजमार्ग सिद्धत्वकी प्राप्ति ...
लिये नहीं है, एक तंग निर्वाणका मार्ग इस आवागमन
(आवागमन) से बाहर निकल जानेका है। यह सब ...
लिये एक ही है जिसमें किनारा करनेवाले नीचे ...
कर मिथ्यात्व और कषायोंकी कड़ी चट्टानों पर पड़ते ...
होते हैं। यहां किसीको किसी या ज्ञानी दलिका भी ...
है। निर्वाणके मार्ग पर चलनेवालेका नियमोंके चुननेका
... है और न हो सकता है। हम ...
... कि यह ... कि यह ...

चाहिये। अबतक मुमुक्षु अपने जीवनका उत्तमसे
न संसारकी सेवा उपदेश दान इत्यादिके रूपमें देता
परन्तु वह अब अपना परलोक सुधारनेके लिये इससे
करता है। साधुकी अवस्थामें इसका अब अपने बड़े
अर्थात् इच्छा और कषायोंके नाशके अतिरिक्त और
पदार्थोंसे संबंध नहीं है जो व्रत कि अब वह पालन करता है
है जिन को वह गृहस्थ दशामें भी पालता था। परन्तु वह
ी कठिनतासे पाले जाते हैं। इनके अतिरिक्त वह

—चलने फिरने
—बात चीत करने
—खाने पीने
—उठाने धरने
—पाखाना पेशाब आदिके करनेमें बड़ी सावधानीसे कार्य
ा है कि किसी प्राणीको कष्ट न पहुंचे। वह अपने मन वचन
शरीरको वशमें लाता है जिससे वह सांसारिक व्यवहारमें
ा और १० प्रकारके उत्तम धर्मोंपर कर्तव्यपरायण होता है
निम्न प्रकारके हैं।

१—क्षमा २—मार्दव (नम्रता) ३—आर्जव (ईमानदारी)
शौच। मनसे लालचका निकालना ५—सत्य ६—संयम
तप, ८—त्याग, ९—आकिंचन (उदासीनता) १०. ब्रह्मचर्य
धर्मके साथ 'उत्तम' शब्द जिससे अर्थ उत्तम या सर्वोत्तम

१०

नारमें कोई ऐसा कार्य्य नहीं है जिसको मनुष्य नहीं कर
है यदि वह एक बार अपनी हिम्मत उसके करनेकेलिये
। यदि पूर्ण कृतकृत्यता हमको तत्काल नहीं भी मिले तो
त्यु हो जानेसे परिश्रम निरर्थक नहीं जाता है। ज्ञान और
का उत्तम फल जीवके साथ एक जन्मसे दूसरे जन्म
कार्माण शरीरके उत्तम प्रकारके परिवर्तनोंके रूपमें जाता
ौर आगामी जीवनके शरीर संबन्धोंके निर्माणमें पूरा
लेता है। तब मनका उत्साह और प्रसन्नता ही आवश्यक
, सत्य ज्ञानके प्राप्त होनेपर कृतकृत्यताके लिये है। यदि
। कुशल कानूनवेत्ताको जब कि वह गोदके बच्चेकी दशामें
न पुस्तकोंकी संख्या, जिनको उसे बादमें पढ़ना होगा, बताई
। और उसको उसपर विचार करनेका समय दिया जाता
निश्चय है कि वह भयसे मृत्युको प्राप्त होगया होता। परन्तु
र मध्य वयतसे ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने केवल कानूनहीमें नहीं
और विषयों और शिल्पोंमें भी ख्याति प्राप्त की है। और
भी नहीं है कि मोक्षके पथिकके मार्गमें केवल कष्ट और
ही हों। यह सत्य है कि कुदरतमें गुलाबका फूल बिना
के नहीं मिलता है, परन्तु यह भी इतना ही सत्य है कि कोई
ालों कांटा भी कुदरतमें ऐसा नहीं है जो फूल तक हमको
पहुंचनेदेता यदि हमको उसके अन्वेषणार्थ ढंग ढ़ूंढ़ आव
उसकी तलाशमें कर्तव्यपरायण हों। यदि आप कानू

ो कभी नहीं विस्मरण करना चाहिये कि सत्य आत्मज्ञान
रित्रका मूल अर्थात् नित्य जीवनके सदैव हरे रहनेवाले
ा असली बीज सम्यग्दर्शन है, जिसके निमित्त रत्नकरंड-
काचारमें जो एक बहुत प्राचीन शास्त्र है ऐसा कहा है:—

"तीनों लोक और तीनों युगोंमें जीवोंका सम्यग्दर्शनके बराबर कल्याणकारी कोई दूसरा नहीं है और न मिथ्यात्वके सदृश कोई अकल्याणकारी है। शुद्ध सम्यग्दृष्टि जीव, कान्ति, प्रताप, विद्या, वीर्य, कीर्ति, कुल, वृद्धि, विजय और विभवके स्वामी, कुलवान, धर्म अर्थ काम मोक्षके साधक और मनुष्योंमें शिरोमणि होते हैं। सम्यग्दृष्टि जीव स्वर्गोंमें तीर्थंकर भगवानके भक्त होते हैं, और आठ प्रकारकी ऋद्धियोंसे तुष्यमान और अतिशय शोभायुक्त होकर देवों और देवांगनाओंकी सभामें बहुत समय तक आनंद भोगते हैं। निर्मल सम्यग्दृष्टि पुरुष सम्यक्त्वके प्रभावसे चक्रवर्ती राजा होते हैं जिनके चरणोंपर सब राजा मस्तक झुकाते हैं, और जो नौ निधियों चौदह रत्नों और ६ खंडोंके स्वामी होते हैं। सम्यक्दर्शन ही है शरण जिनको ऐसे जीव जरा-रहित, रोगरहित, क्षयरहित, बाधारहित, शोक भय शंकारहित परम प्रकर्षताको प्राप्त हुआ है सुख और ज्ञानका विभव जिसमें ऐसे और कर्ममलरहित मोक्ष पदको प्राप्त होते हैं। (जिनेन्द्रकी है भक्ति जिसके ऐसा भव्य मोक्षगामी)

१४९.

चतुर्थ व्याख्यान।

दार्शनिक सिद्धांत।

आपके व्याख्यानका विषय दार्शनिक सिद्धान्त (Metaphy-: cs) है। इसमें कुछ संशय है कि इस शब्दका यथार्थ अर्थ क्या! परन्तु प्रारम्भमें यह अरस्तुके सैद्धान्तिक विषयमें व्यवहृत] किया गया था जो उसकी लिखित पुस्तकोंके संग्रहमें पदार्थ ज्ञान (Physics) की पुस्तकके पश्चात् व्यवस्थित था। परन्तु इस शब्दका भाव कुछ भी क्यों न हो मेरे विचारमें, हम बिना किसी संशयके उसका संबंध उस ज्ञानसे कर सकते हैं जो पदार्थ ज्ञान (Physics) से उपरान्त है। अस्तु। फिजिक्स तो सत्तात्मक (विशेष) पदार्थोंके ज्ञान से सम्बन्ध रखता है और मेटा-फिजिक्स उनके भेद और संबंध स्थापित करता है एवं अन्ततः उनको एक व्यवस्थित योग्य ज्ञानके तौर पर तरतीब देता है। जैसा हम पहले कह चुके हैं सिद्धान्त और विज्ञानका जोड़ा है अर्थात् उनका आपसका [illegible] ज्ञानोंका सहायक है। कारण कि विज्ञान [illegible] को जीवनकी [illegible] समस्याओंसे बचनेके हेतु यह आवश्यक है कि वह [illegible] समस्त [illegible] पूर्ण रूपमें समान करनेका प्रयत्न करे [illegible] सिद्धान्तका चाहिये कि

असहमत-

जीव अपरिमित देवेंद्र समूहकी महिमाको और ... मस्तकसे पूजनीय चक्रवर्तीके चक्रको तथा नीचा ... तमाम लोक जिसने ऐसे तीर्थंकर पदको पाकर ... पाता है।"

अतः केवल यह कहना शेष रह गया है कि जो परि... आजके व्याख्यानमें हमने निकाले हैं यह सब जैनसिद्ध... सम्मिलित है जो विज्ञानसे नितांत सहमत पायाजाता है। ... बहुतसे परिणामोंको हम अन्य धर्मोंमें भी पायेंगे जब ... अन्वेषणका समय आवेगा ।
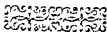
यह प्रकृतिके नियमोंका रंचमात्र भी साथ न छोड़े तांके व
विरुद्धतासे जो विचारावतरण और यथार्थ प्राकृतिक क्रिय
मध्य पाई जाती है बच सके। अतः मेटाफिजिक्स वह वि
जो अनुभूत घटनाओं पर विचार करनेकी कार्रवाई या
फल है जो अपने अन्तिम स्वरूपमें एक सम्पूर्णरूपेण
ज्ञान है जो समस्त पदार्थोंका बोध करानेको समर्थ हो
इस कारणवश उच्चतम उद्देशके हेतु व्यवहृत किया जा
यह व्याख्या हमारे अर्थे अत्यन्तावश्यक है कारण कि
इस समय हर प्रकारके मानसिक विचारावतरणसे कोई
नहीं है। हमको सुतरां केवल उस विचारसे गरज है
सम्बन्ध किसी न किसी प्रकारसे धर्म हो। हमारा कोई
मानुषिक विचारावलीके इतिहास लिखने अथवा धर्मके
में विविध देशों और भाषाओंके विद्वानोंकी सम्मतियोंक
त्रित करनेसे भी नहीं है। और न हमें इतना अवकाश है

सामाकी योग्यताके बाहर है।

अत हम अपनी खोजको व्यावहारिक । अत
समस्याओं तक मर्यादित रक्खेंगे अर्थात् उन दर्शनोंत
प्रचलित तमाम सम्बन्धित है। और उनमेंसे भी हम कि

तके रचयिताके यथार्थ उद्देश्य तक नहीं पहुंच पाया ! आपको
स दर्शनके स्थापक कपिल मुनिके बताए हुए तत्त्वोंका स्मरण
गा। तो भी आपकी सुगमताके लिए मैं उनको यहांपर पुनः
लखे देता हूं:—

पुरुष (१)　　　　प्रकृति

अव्यक्त (२)　　　　व्यक्त

महत (३)

अहंकार (४)

सत्वके साथ　　　　तमसके साथ

पंच ज्ञानेन्द्रिय (६–१०)　मन (५)　पंच कर्मेन्द्रिय (११–१५)

शब्द (१६) स्पर्श (१७) रूप (१८) रस (१९) गंध (२०)

आकाश (ईथर) (२१) वायु (२२) अग्नि (२३) जल (२४) पृथ्वी (२५)

आपके सामने यह नकशा उपस्थित है जिसमें तत्त्वों और उनके स्वरूपोंका क्रम लिखित है जो महत (३) से प्रारंभ होता है, क्योंकि पहिले दो तत्त्व अनादि हैं। कपिल मुनिके मतानुसार

(१) बुद्धिका प्रकाश होना।

(२) उस बुद्धिमें अहंकार अर्थात् मैं के संकल्पका उठना।

(३) मैं अर्थात् मन, व ज्ञान व कर्म इन्द्रियोंकी शक्तियों और गुणोंका विकसित होना।

(४) इन्द्रियोंका उत्तेजित होना अर्थात् ऐन्द्रिय दर्शन या चेतनता रस गंध आदि।

(५) ऐन्द्रिय चेतनताकी सामग्री रस गंध इत्यादिके सूक्ष्म तन्मात्राओंका पंच स्थूल भूतरूप जिनके पदार्थ बने हुए हैं परिवर्तित होकर बाहरकी ओर आगे जाना।

यदि आप सांख्यवादियोंके इस मतको अपनी दृष्टिमें रक्खें यह संसार देखनेवालेके मनमें है और उसके पदार्थ ऐन्द्रिय चेतना ही हैं जिनको हम मनद्वारा जानते हैं तो आपको कपिल नेका सिद्धान्त समझनेमें कोई दिक्कत मान नहीं होगी। (इन त्त्वके तत्त्वोंको अवस्थाओंकी तुलना साथसाथ लिखकर उन लसे करने जिससे खूब विदित होता है कि कपिलमुनिने कर उठते हुए मनुष्यको संसारका ज्ञान होना माना है:—

सोकर उठता हुआ मन	संसारका कौतुक
(१) अज्ञात और सुप्तावस्थाका क्रमवार प्रगट होना।	(१) संसारकी सृष्टि और नाशका क्रमवार प्रकट होना।
(२) सुप्तावस्थामें चेतनका नाश नहीं होता है सुतरां वहां कोई	(२) प्रलयमें पुरुषका नाश नहीं होता है बल्कि संसारका

तर्क'। कणादके दर्शनमें भी बंधन या आवागमनका यथार्थ स्वरूप नहीं बताया गया है। और न वास्तविक तत्वों पर ही विचार किया गया है प्रमाण जो दिए गए हैं सब मनकल्पित हैं जब कि वैज्ञानिक (Science) भाव तो अनुमानतः सर्वत्र ही अनावश्यक है।

वैशेषिक दर्शनकी कठिनाइयां योग दर्शनमें भी पाई जाती है। कुछ लेखकोंकी सम्मति है कि शब्द 'योग' एक मूल (Root) से निकला है जिसका अर्थ जोड़ना है। इसी भावका समावेश जैनधर्ममें पाया जाता है जहां मन, वचन और कायको आस्रवके तीन योग (प्रणालियां) माना है। मि० रामप्रसाद, एम. ए. योगशास्त्रके निपुण भाष्यकार हिंदूधर्मकी पुस्तकों (सेक्रेड बुक्स ऑफ दि हिंदूज) में इसका अर्थ "समाधिको प्राप्त होना-ध्यान करना" करते हैं। मैक्स मूलर साहबके अनुसार योग शब्दका अर्थ अनुमानतः किसी कार्यके लिए अथवा कठिन श्रमके लिए अपनेको तैयार करना है और कल्पनाओंको उनके अपने स्थानको विचलित होनेसे रोकना है। यहां पर किसी दूसरेसे अपने तईं जोड़ देनेका भाव नहीं रक्खा गया है और न किसीके साथ जोड़नेका। क्योंकि 'परमेश्वरमें जब होनेका विचार' योग दर्शनका कोई अंग नहीं है। 'पतञ्जलि ऋषि कपिल मुनिके सदृश आत्माको अन्य समस्त पदार्थोंसे पृथक करके ही संतोष प्राप्त कर लेते हैं। और इस बातका

असंभव हो तो उतना ही असंभव उसको असत्यका
प्रत करना होगा। और यदि स्वप्न अथवा भ्रमका दृष्टांत
आवे जो मृगतृष्णा अथवा नटविद्या (इन्द्रजाल) से
। हुआ हो तो यह मानना पड़ेगा कि स्मरण शक्तिके अनु-
स्वप्न भी पहिलेको देखी हुई वस्तुओंके दृश्यके तक हैं
भ्रममें भी हम किसी वस्तुका भ्रम करते हैं। यहां तक कि
त्मक ज्ञान सत्यज्ञानसे सदैव दूर हो सका है" (सिभ-
फि० पृ० ४२५)।

गौतमका वचन है कि ज्ञानका संबंध मन और इंद्रियोंसे
है सुतरां आत्मासे है। वह आवागमनके सिद्धांतको
कार करता है। और राग, द्वेष एवं मूढ़ताको प्रधान दोष
कहता है। जिनमेंसे मूढ़ता निकृष्ट है। पुण्य पापके अभावमें
रसे जीव पृथक् हो सका है। गौतमके सिद्धांतमें ईश्वरको
स्था गौणरूपमें है। उसकी सत्ताकी आवश्यका केवल
वागमनमें पड़े हुए अनंत जीवोंको उनके कर्मोंका फल देनेके
प है।

न्यायके तत्वोंमें ज्ञानके यथार्थ तत्व, जिनको हम धर्मकी
ज्ञानिक खोजमें स्थापित कर चुके हैं, नहीं पाए जाते हैं और
उनमें मोक्षके स्वरूपका ही वर्णन है जो यथार्थ उद्देश्य है।

कणादका वैशेषिक दर्शन भी विशेषतया न्यायकी बहिन
। उसमें कोई विशेष उल्लेखनीय बात नहीं है जो अन्य स्थान

इस बातको समझानेके लिए जैमिनि यह मानता है कि
क फल अर्थात् कोई अदृष्ट वस्तु या कर्मको एक प्रकारकी
ात् अवस्था अथवा फलकी एक अदृष्ट पूर्व अवस्था
ी जो एक अनोखी अपूर्व अवस्था है और जो शुभ कर्मोंमें
दनान् रहनेवाले फलको व्यक्त करती है और वह यह
ी कहता है कि यदि हम परमेश्वरको स्वयं पुण्य पापके
सुख दुःख देनेवाला मान भी लेवें तो हमको उसे विशेष
र अत्याचार और पक्षपातका दोषी ठहराना पड़ेगा।
अस्तु; यह विशेष योग्य प्रतीत होता है कि यह मान लिया
जावे कि शुभ या अशुभ सब कर्म अपना अपना फल देते
हैं अथवा अन्य शब्दोंमें संसारके नैतिक प्रबंधके लिए किसी
ईश्वरकी आवश्यकता नहीं है (षि० सि० फि० पत्र २११)।
मेक्समूलर कर्मोंकी स्वयं फलदायक व्यवस्था पर विवेचन
ते हुए लिखते हैं कि:—

"——जैमिनि ईश्वरको संसारमें असमानता [illegible]
दोषी नहीं ठहराता है और इसलिए प्रत्येक वस्तुको कारण
कार्यके सिद्धांत पर अवलम्बित करता है और संसारको
[illegible] अवस्थाओंको शुभ और अशुभ कर्मोंके [illegible]
[illegible] है पर [illegible] नहीं है
[illegible]
[illegible]

चंचलताको रोकनेका उपाय है। और बहुतसे ...
इसका रंचमात्र भी उल्लेख नहीं है। और ...
विशेष ध्यान नहीं दिया गया है (देखो ज्ञानार्णव...
समाधि अतरंगसे संबंधित है और इच्छाओं एवं ...
निरोध करनेसे प्राप्त होती है। पतञ्जलि ऋषिने ...
भी वर्णन नहीं किया है जिससे शुद्ध ...
है। जिन महाशयोंको इस संबंधमें जाननेकी इच्छा ...
'की ओफ नोलेज' नामक पुस्तकके १३ वें ...
करना योग्य है कि जहांपर सम्पूर्ण विषय पूर्णरूपेण ...
अब मेरे पास इतना अवसर नहीं है कि मैं यहांपर ...
विषयका विस्तारसे वर्णन कर सकूं।

अब मैं 'योगदर्शन' के विशेष चित्ताकर्षक विषयों ...
करता हूं जिसका संबंध अद्भुत शक्तियोंकी प्राप्तिसे है ...
विचार है कि आपमेंसे कुछ महाशयोंको इस बातके ...
उत्कट इच्छा होगी कि देखें इस विषयपर जोतम ...
निर्णय क्या होता है? परन्तु, महाशयो! मैं कानूनका ...
और कानूनके ज्ञाताओंका चित्त स्वभावतः सुनी सुनाई ...
मानलेनेके विपरीत होता है। तब भी 'विभिन्न धर्मों ...
सिद्धान्तोंकी कथाओंका एक विशाल ढेर है जो निःसंदे...
बातको साबित करता है कि कुछ अद्भुत शक्तियां ...
शीलता एवं तपस्याका जीवन व्यतीत करनेसे प्राप्त होती है।

जब कि केवल बहुतसे वैदिक देवताओंके परमेश्वरका विश्वास भी बहुत समय पहिले नहीं हो चुका था बल्कि ... उच्चतम शक्ति अथवा परमात्मपने को मानने वाले कोई नाम सिवाय ब्रह्म या सत्के अथवा "मैं" नहीं था" (सि॰ सि॰ फि॰ पत्र ४४३-४५०)

हमको मेक्समूलर साहब यह भी बतलाते हैं—
"भारतीय दार्शनिकोंके निकट नास्तिकत्वका पयासियोंके भावसे नितान्त विपरीत है। इसका ... एक क्रियावान, व्यस्त और व्यक्तित्वधारी मनुष्यके परमेश्वरके अस्तित्वको अस्वीकार करना है जिसमें ... या प्रभु कहते हैं। परंतु हिन्दू दार्शनिकोंने उसके ... उससे ऊपर एक उच्च शक्ति मानी है। चाहे वे उसे ... या परमात्मा अथवा पुरुषके नामसे पुकारें। इस अस्तित्वको अस्वीकार करना था कि जिसके यथार्थ नास्तिक समझा जाता था।"

हिन्दू सिद्धांतके विषयको पूर्ण करनेके पहिले मुझे ... अत्यन्त उपयोगी उपदेशको बताना नहीं ... चाहिए —वे

नाना प्रकारके आचार्योंने अनेकानेक सिद्धांत ... है परन्तु तुम्हें उनीका ग्रहण करना चाहिये जो ...

कार तप द्वारा पुराने कर्म्मोंका नाश करनेसे और नये र्म्मोंके न करनेसे भविष्य जीवनकेलिए आस्रव नहीं होता। आस्रवके न होनेसे कर्म्मोंका नाश हो जाता है । और इस ंग पर पापका नाश हो जाता है। और इस प्रकार दुःखका विध्वंश हो जायगा । ऐ भाइयो ! निगन्थ (जैनी) ऐसा कहते हैं......... मैंने उनसे पूछा कि क्या यह सत्य है कि इसको तुम मानते हो और इसका तुम प्रचार करते हो?....... उन्होंने उत्तर दिया....... हमारे पथप्रदर्शक नात-पुत्त सर्वज्ञ हैं. ..., वह अपने ज्ञानकी गंभीरतासे यह बताते हैं: तुमने भूतकालमें अशुभ कर्म्म किए हैं। इसको तुम कठिन तपस्या और कठिनाइयोंको सहन करके नष्ट कर दो। और जितना तुम मनसा वाचा कर्मणासे अपनी इच्छाओंको वशमें करोगे उतना ही अशुभ कर्म्मोंका अभाव होगा । ....इस प्रकार अंतमें समस्त कर्म नष्ट हो जांयगे और सर्व दुःख भी। इससे हम सहमत हैं।" (Majjhima ii, 214 व:ओ. i, 238)" इ० हि० ऐ० जिल्द २ पत्र ७० ।

इस सहमतिके होते हुए भी जब परोपहासयकी कठिनाईका ानना पड़ा जिसका अर्थ सन्यासके संबंधमें सर्व प्रकारकी ठिनाइयोंको सहर्ष सहन करना है और जब उसने अपनेको बला और कमजोर पाया परन्तु वह ज्ञान प्राप्त न हुआ जिसकी ह खोजमें था तो बुद्धने ऐसा कहा.--

का साधन किये हुए करना चाहता था। संभवतः उसने इस कभी ध्यान नहीं दिया कि शिखर पर पहुंचनेके लिए सीढ़ी आवश्यक्ता होती है। और यह कि तपस्यासे सिवाय दुःख र क्लेशके और कुछ नहीं प्राप्त होता यदि वह सम्यग्दर्शन और यक्ज्ञानके साथ न हो। इस प्रकार बुद्ध बड़ी अवस्था तक प्रमार्गका प्रचार करता रहा। और लोगोंको दुःखसे बचनेके ए निर्वाणकी शून्यतामें गर्त्त हो जानेका उपदेश देता रहा। अस्सी वर्षकी अवस्थामें सूअरका मांस खानेके पश्चात् मृत्यु प्राप्त हुवा।

द्धके उपदेशका प्रभाव बहुत लोगोंके हृदयों पर इस कारणसे ा कि उसमें कठिन तपस्या नहीं करनी पड़ती थी और उसने योगकी कठिनाइयोंको भी, जो वास्तवमें एक व्यर्थ मार्ग रीरिक क्लेशोंका है और जिसका तपस्याके यथार्थ स्वरूपोंसे वे जैनसिद्धान्तमें दिये हुए हैं पृथक् समझना आवश्यक है, नका कर दिया था। परन्तु बुद्धसिद्धांतके विषयमें एवं उसके ावागमनके मतके संबंधमें जिसमें कर्म्म करनेवालेके स्थान पर र अन्य पुरुषको कर्म्मोंके फल रूप दुःख सुखको भोगना पड़ता। और उसकी मानी हुई आत्माओंकी अनित्यताकी बाबत हम हे जो कुछ विचार करें वा कह तो भी हमको उसकी सफलता ायोंके दुःखको बहुत स्पष्टरूपमें जान लेनेके लिए और उस खको शब्दोंमें अपूर्व योग्यतासे चित्रित करनेके लिए अवश्य

।-वर्षा-अग्नि इत्यादि जैसे नैसर्गिक घटनाओं या विविध
ओं व स्त्रियों जैसे शासनका ज्ञान भोजन बनानेकी विद्या
देके रूपक अर्थात् स्वरूपों किया (Personifications)
आ है। परन्तु इन विद्वान जिज्ञासुओंमेंसे एकको भी वेदों,
व इन्जील या ज़िन्दावस्ताका भेद नहीं मिला। पूर्वीय
ाओंके ज्ञाता (Orientalist) विचार करते हैं कि
में कहे हुए सूर्य, इन्द्र और अग्निको सूर्य बादल और
का अलंकार मानना और पवित्र इन्जीलके नये और पुराने
हद नामोंको ऐतिहासिक रीतिसे पढ़ना बस धर्मकी तहको
च जाना है। और वर्तमान समयके विद्वानोंने अपना एक
कारका 'प्रशंसा' समाज स्थापित कर लिया है जिसका हर
क सदस्य हर समय इस चिन्तामें लगा रहता है कि इस बात
ो ज्ञात करे कि उनकी इस प्रकारके अन्वेषणोंकी शाबासी
किसको दी जाये और इससे बिदून किसी निजी स्वार्थताके
ज़ाहिर कर दे। यदि मैं इन जिज्ञासुओंके धार्मिक अन्वेषण व
तहक़ीक़ात पर थोड़ा भी विचार करूं तो उसके लिये कमसे कम
एक महस्र पृष्ठोंकी पुस्तक लिखनेकी ज़रूरत होगी। यह बात
नहीं है कि यह लोग लिखने लायक नहीं हैं या उनकी शिक्षा
न [illegible] हैं [illegible] उनमेंसे [illegible] ऐसे हैं कि इस
समय उनके समान दूसरा [illegible] नहीं है परन्तु [illegible]
वह सबके सब बुद्धिकी-अतीव दृष्टिसे [illegible] हैं और [illegible]

और यह नहीं सोचा कि उनके अनेक देवी और
जो कारनामे बयान किये गये हैं वह देवताओंके
नहीं। इन्द्रने अपने गुरुकी स्त्रीके साथ जार कर्म
देवगुरु (बृहस्पति) ने अपने बड़े भाईकी भार्य्याको
सोम यानी चन्द्रने स्वयम् देवगुरुकी स्त्रीसे एक
किया । परन्तु सनातनधर्मावलम्बी इस प्रकारके
पर दृष्टि नहीं देते हैं। इन आश्चर्यजनक देवताओंकी
र्यजनक बात यह है कि अब उनके कारनामे जारी
पितु उनके सब काम पुराणोंके लिखे जानेके पहले
हो चुके थे। जीवित पुरुषोंकेलिये यह कैसे सम्भव है?
से व्यक्तियोंके लिये जो एक क्षण भर भी अपने
स्त्रीको बचानेका ख्याल किये बिना नहीं रह सके
देवताओंके केवल इसी विशेषणसे बुद्धिमान पुरुषोंको
जाना चाहिये थी परन्तु अज्ञानसे विशेषतया लोग
कठोर भी होते हैं।

कि वैदिक धर्मका सच्चा सिद्धान्त क्या है और उन्होंने
अनेक देवी देवताओंका भेद क्या है? परन्तु इसके
ने इन जटिल प्रश्नोंका उत्तर दूं यह आवश्यक है कि
[illegible] कि [illegible] एक वेदवेत्ता अथवा
सनातनधर्मी [illegible] मनुष्यके व्यवहारमें उन्नति
करनेवाला [illegible] हिन्दोस्तानी

पर उत्तमतासे प्रश्न करते हैं और निर्बुद्धि-
को दूर करनेमें पर्याप्त योग्यता रखते हैं ५."
अधिकार और शासनकी आवश्यक अधिकार
"३-लाभदायक गुणोंवाली अजा दूध देती है ...
लिये पुष्टिकारक भोजन है । उत्तमसे उत्त
समय लाभदायक होता है जब कि वह
लोंकी भांति प्रस्तुत किया जावे।
पाकशास्त्रानुकूल तय्यार किया हो-"
अब आप एक ही दृष्टिमें देख सकते हैं कि ...
विशेष बातें यह है-
१-इसका धर्मसे कोई सम्बंध नहीं है-और
२-इसकी लेखनशैली पाठशालाके विद्यार्थीको ...
कि किसी विद्याका व्याख्यान (वैज्ञानिक)...
यह कहना आवश्यक नहीं है कि यह वेदके ...
जिसके एक भागका यह अनुवाद कहा जाता है, और
अर्थ नहीं है। यदि दुर्जनसंतोषार्थ यह मान लिया जाये
पवित्र वेदोंका उपहास नहीं होता तो भी यह कहना
पड़ेगा कि उसमें वेदोंकी कुछ तारीफ भी नहीं है
न इस हिन्दू सम्प्रदायको ही जो वेदोंको स्वीकार
वेदोंके समझनेमें सनातनधर्मियोंने भी कुछ
शामिल नहीं का। उन्होंने अपने पूर्वजोंकी पुस्तकोंको ...

"वेद स्वयम् अपना भाव प्रगट नहीं करते हैं और यह तब
समझमें आ सक्ते हैं कि जब गुरु उस वस्त्रको जिससे
ढके हैं उतार देता है और उन बादलोंको जो उनके
आंतरिक प्रकाशको छिपाये हुये हैं, हटा देता है।"
भाग्यवश स्वयम् ज़ेकोलियेट हिंदूमतके समझनेमें
र्थ रहा। यथार्थ उसको इस बातका ज्ञान जरूर हो गया था
उसका भाव छिपा हुआ है। उसका दिमाग वर्तमान प्राकृतिक
से इतना भरा हुआ था कि उसमें आत्मिक ज्ञानके अस्तजी
के लिये बहुत कम अवकाश था।
के-एन-अय्यर महोदय अपनी बहुमूल्य पुस्तक "दी
िष्ट डिस्ट्री ओफ भारतवर्ष" में लिखते हैं कि "पवित्र शास्त्र
समयके किस्से नहीं बताते हैं। इनमें मनुष्योंके लिये अत्यंत
कारी शिक्षा है। आत्मिक उन्नतिका वैज्ञानिक मार्ग इनमें
हास, भूगोल, नीति और राजनीति शासन सम्बंधी बातोंके
पर वर्णन किया गया है।"
वेदोंके समझनेके लिये वेदांगोंका जानना आवश्यक है।
[illegible] निरुक्त (अथवा निघन) सरले [illegible] आवश्यक है
[illegible] ज्ञान बिना किसीको वेदोंका भावार्थ समझनेकी आशा
है अपनी रची हुई महाभारतकी भूमिकामें के. एन अय्यर
[illegible] लिखते हैं—
[illegible] मनुष्योंका शिक्षा दैनिक लिये पृथ [illegible]

क्यों वेदोंके समझनेमें असमर्थ रहे। इसका कारण यह
वेदोंकी भाषा संस्कृत नहीं है जैसे पवित्र इन्जीलकी भ
रानी और यूनानी और कुरान शरीफकी अरबी नहीं
इससे आपको आश्चर्य होता है ? तो भी यह वास्तविक
जिन धार्मिक पुस्तकोंका मैंने यहां पर उल्लेख किया है
दो भाषाओंमें लिखी हुई हैं, एकमें नहीं। जिन शब्दों
इबारत लिखी गई है वह निस्संदेह एक कौमकी भाषा
इन शब्दोंकी एक दूसरी लिपि अर्थकी
भाषा है । धर्मवेत्ता इस छिपी हुई भाषासे परिचित
थे, उन्होंने अपनी सारी कारीगरी उन
भाषाओंमें नकल और अनुवाद करनेमें सर्फ कर
मायकी तहको यह न पहुंच पाये। यही कारण है
जेन्दावस्था, इन्जील और कुरान, उन विद्वानोंकी
कहानियां और रसियाओं और नातों और कीलोंकी
से भरी हुई मालूम होती है । सामान्यतः यह पवित्र पुस्त
ही इसका शब्दार्थके विरुद्ध आज्ञा देती है। लुई जेकोलियट
भगवान्के पर्णित इस्तका देकर हिंदू शास्त्रोंके सम्बन्ध
कहते हैं ([illegible] पृ १०२)—

"पवित्र पुस्तकको साधारण पुस्तकोंकी भांति उस
नहीं पढ़ना चाहिए। यदि इनका असली भाव-
[illegible] होना तो इन्द्रादिको उनके अध्ययनसे क्यों

स बातको अब लोग समझने लगे हैं कि इन्जीलमें जिस
सवतः और सब पुस्तकोंको नितवत लोग बहुत कम
पाये हैं, असंख्य ऐसी आयात लिखी हैं जिनको ऐसी
े विद्वान जो उनके असली भावको खोल सके, कोई नहीं
सका है। यह कुंजी कबबालामें मिलेगी"। कबबाला
सोंमें विभाजित है जिमेट्रिया, नौटेरिकोन और तेमुव।
े जिमेट्रिया शब्दोंके मूल्य पर निर्भर है और यह बताता
जो शब्द एक संख्याके होते हैं वह एकार्थवाची भी
है। शेष दो बहुत पेचदार हैं जैसे किसी शब्दके अक्षरोंको
२ शब्द मानकर उससे एक जुमला बनाना इत्यादि। मगर
ो उनसे यहां पर कुछ सम्बंध नहीं है। यहूदियोंके गुप्त
त्तमें इसप्रकारके अङ्काङ्कित या संख्या पर बहुत जोर
ा गया है। इबरानी भाषामें हिन्दुसे पृथक् नहीं है। हर एक
रको एक विशेष संख्या है जैसे अ = १, ब = २, ज = ३,
= ४। इस संख्यापर यह नियम निर्भर है कि हर शब्द एक
न या परिमाण है और हर रकम एक शब्द। इस प्रकारका
खाका शुमार उर्दू फारसीमें भी है जिसको सामान्यतः अबजद
(केहरा) कहते हैं। ज्ञात होता है कि यहूदियोंने अपनी पवित्र
तकमें इसका बहुत प्रयोग किया है। इसप्रकार उनकी पवित्र
तक केवल रहस्योंका एक समूह है जिनका भाव उससमय ज्ञात
सकता है, जब उनकी इबारतका गुप्त भाव प्रत्यक्ष हो जावे।

जाते हैं जो बहुत समयसे बराबर चले आये हैं इस छिपी हुई विद्याका बार २ उल्लेख इञ्जीलके नये अहदनामेमें मिलता है और उपनिषदोंमें और अन्य प्राचीन शास्त्रोंमें भी कि जिनमें उसके कतिपय छिपे हुये रहस्योंको सावधानीसे प्रकट किया गया है और इधर उधरके रद्दोंसे जो उसके प्राप्त हुये हैं, यह प्रत्यक्ष रीतिसे स्पष्ट है कि यह सब पुराने धर्म्मों और फिलासफी (दर्शनों) में वास्तवमें एक थी और यथार्थमें उन सबकी बुनियाद थी। ईसाइयोंकी क्लीसियाके आरम्भमें, जो एक गुप्त समाज Secret society की भांति थी इस मर्मविद्याको बहुत सावधानीसे रक्खी जाती थी। और इस नियमानुसार कि बहुतसे बुलाये जाते हैं परंतु उनमेंसे चन्द ही चुने जाते हैं यह केवल उन्हींको सिखाई जाती थी जो उसकी शिक्षाके अधिकारी समझे जाते थे। राजनीतिकी धर्मविरुद्ध चालिसी और स्वार्थी पादरियोंकी चारित्र सम्बंधी निर्बलताओंके कारण आरम्भ होकी शताब्दियोंमें ईसाइयोंके समाजसे यह मर्मज्ञान जाता रहा। और उसके स्थानपर बादकी शताब्दियोंमें नये और पुराने अहद नामोंके शब्दोंकी जाहरी मृतशिक्षा, पर ईश्वरपूजनका एक आज्ञानुवर्ती नियम स्थापित किया गया। इस खयाल पर कि इञ्जीलने आकाशवालोंकी भांति मनुष्यके साथ ईश्वरके मनमानेके बनावका उल्लेख है उसके प्रति-

ताब्दीमें भी ओरीजेनने जो इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनि-
नुसार ईसाई समाजका सबसे प्रख्यात और प्रखर विद्व
रहस्यकी रीतिको पवित्र इन्जीलकी शिक्षाकी तहतक
के लिए प्रयोग किया था। ओरीजिनको पूरा विश्वास था
न और प्राचीन अहद नामोंमें एक अक्षर भी ऐसा नहीं
ईश्वरीय अर्थ और रहस्यसे रिक्त हो। वह प्रश्न
है:—

परन्तु क्यों कर हम इस गुप्त विचारके साथ इन्जीलकी
सी कहानियोंको सहमत कर सकते हैं जैसे 'लूत'का अपनी
पुत्रियोंसे एकान्तसेवी होना, इबराहीमका पहले अपनी एक
स्त्रीसे और बादको दूसरी स्त्रीसे व्यभिचार कराना, सूर्य्यके
निर्माण होनेके पूर्व तीन दिन और रातका होना। ऐसा कौन
निर्बुद्धि होगा जो यह मानले कि ईश्वरने एक साधारण
मालीकी भांति अदनके बगीचेमें पेड़ लगाये। अर्थात् वास्त-
वमें ऐसे पेड़ लगाये कि जिनको लोग देख सकें और स्पर्श
कर सकें और इनमेंसे एकको जीवनका और दूसरेको नेकी
व बदीके ज्ञानका पेड़ कायम किया, जिनके फलोंको मनुष्य
अपने प्राकृतिक जबड़ोंसे चबा सकें। कौन इसको स्वीकार
कर सकता है कि ईश्वर इस बगीचेमें टहला करता था या
इसको कि आदम एक पेड़के नीचे छिप गया और आदम
ईश्वरके चेहरे (सामने) से भाग गया। बुद्धिमान पाठक

३६६ के एक विद्वत्तापूर्ण निबन्धका कुछ अंश संक्षेप जिसमें कुछ विरोधोंका उल्लेख है आपके समक्ष प्रस्तुत है:—

इन्जीलें परस्पर एक दूसरेका विरोध करती हैं। और यूहन्नाकी इन्जील शेष ३ इन्जीलोंसे इस कदर विरुद्ध है कि व जिज्ञासुओंने इसमें और शेष सब इन्जीलोंमें जो जीवन चरित्रकी भांति लिखी हुई हैं विवेचन किया है.........इसके अतिरिक्त कि युहन्ना मसीहका उल्लेख शेष ३ इन्जीलोंसे बहुत विरोधके साथ करता है वह ईसूके रात्रि भोजनका (Supper) उल्लेख नहीं करता है, वह ईसूकी मृत्युकी दूसरी तिथि नियत करता, है, वह निस्तारपर्वको ३ ईदोंका उल्लेख करता है जब कि और लेखक केवल एकहीका करते हैं। और वह ईसूकी जीवनसम्बंधी सब घटनाएं एकमात्रमें होना बताता है जब कि औरके अनुसार ईसूके जीवनका अन्तिमभाग ही वहां व्यतीत हुआ। यूहन्नाकी इन्जीलमें जीवनपरिचय देनेवालेका अभिप्राय बहुत कम रह जाता है। उसमें करामातें हैं। अर्थात् वह ज्यादा आश्चर्यजनक हैं और साथ ही साथ वह गुप्त रहस्योंकी ओर संकेत करती हैं। ईसूका सब जीवन शेष तीनों इन्जीलोंसे बहुत ऊंचा है और 'लोगास' (ईश्वर वाक्य) की भांति है। परन्तु साथ ही में ईसूको वह योसुफका पुत्र बताता है और कुमारीके

मसीहके जी उठनेके निमित्त इनके लेखक एक दूसरेसे परस्पर विरोध रखते हैं। मरकसकी इन्जीलके १६ वें बाबको ९ वींसे २०वीं आयतोंका लेख बादका बढ़ाया हुआ है। ......लूकाकी ऐतिहासिक कल्पनाएं झूठी हैं। हिरोद कभी बादशाह न था किन्तु गवरनर था। कुरोनियकी ईसूके इतिहाससे जा मिलाता है जो सन् ७ से ११ इस्वी तक हाकिम था और इसलिये ईसूकी कहानीका उससे कोई सम्बंध नहीं है। वह लुसानियसका भी उल्लेख करता है यद्यपि वह ईसूके उत्पन्न होनेसे ३४ वर्ष पूर्व मृत हो चुका था......इन्जीलोंके लेखक जो दरियामें बपतिस्मा देनेका वर्णन करते हैं और विशेषतया यरदन नदीमें, जहां स्नान करना भी मना था, पेलस्तीनके व्यवहारोंसे परिचित न थे। लूकाकी इन्जीलमें दो महायाजकों कियाफा और हन्नाके एक ही समयमें मौजूद होनेका उल्लेख है जो असम्भव है। ईसूका हैकलके उस भागमें शिक्षा देना कहा गया है जो केवल बलिदानके लिये विशिष्ट था। [illegible] व्याख्यान पूजामंदिरमें हुआ करता था। [illegible] इन्जीलोंमें कचहरियोंका यहूदियोंके नगरमें मुकादमा करनेका आश्चर्यजनक विरोध पाये जाते हैं। धार्मिक पर्वोंके नियम कानूनी कार्रवाई नितांत मना थी। इसलिये मसीहका मुकदमा निस्तारके पर्वके दिन नहीं हो सकता था। ऐसे समयों पर हथियार लेकर फिरना भी मना था।

बच्चा होनेका उल्लेख नहीं करता है।......अ
परस्पर सहमत होती है, मत्ती ईसूकी उत्पत्ति
सनसे ४ वर्ष पूर्व हिरोदके समयमें निर्धारित
लूका उसको १० वर्ष पश्चात् नियत
ईस्वीमें। परन्तु आगे चलकर वह प्रतिपादन
तिबारय कैसरके राज्यके १५ वीं वर्ष (=२८ई०
३० वर्षका था !......मरकस करामाती जन्मका
करता है। मत्ती और लूका यूसूको २ विविध
यूसुफ और दाऊदके वंशमें देते हैं।......परन्तु
से उत्पन्न होनेकी विरोधी है। यदि मरियम और
करामाती जन्मका ज्ञान होता तो वह जब मसीहके
अपने पिताके काममें संलग्न होनेका उल्लेख
(देखो लूकाकी इन्जील बाब २ आयत ५०)
न होते। इन ३ जीवनचरित्र सम्बंधी इन्जीलोंमें
करामातें बहुत कुछ एक भांतिकी हैं परंतु जिस
उनका घटित होना वर्णन किया गया है वह बहुत
है.....सबसे बड़ी करामात लज़रसका जिलाना केवल
की इन्जीलमें पाया जाता है। शेष करामातें......
हैं (जैसे रोटियोंकी संख्याका बढ़ जाना, पानीको
कर देना इत्यादि)। जो पुरुष क्रास (सूली) के
मौजूद थे उनके नाम दो इन्जीलोंमें एकसे नहीं

ा। यह कहना गलत नहीं है कि उस प्राचीन संसारमें सोहके समयके पहले कोई शहर भी ऐसा नहीं था जिसमें क या ज्यादह विविध धर्मोंके मंदिर ऐसे मौजूद नहीं थे जो केसी न किसी खुदावन्दके मरने और जी उठनेकी परिपाटीको बडी धूम धामसे सर्व साधारणमें वार्षिक न मनाते हों।" निघराके मंदिरोंमें तो ईसाई मतसे इस कदर सापेक्षता पाई । थी कि दोबारा जीवित होकर उठनेवाले खुदावन्दको लके खास शब्दोंमें अर्थात् "खुदाका परी जो संसारके को दूर करता है" कह कर बधाई दी जाती थी। निश्चय सब इस विचारको झूठा करता है कि नवीन अहदनामेका क ईसू मसीह कोई ऐतिहासिक पुरुष था। और नि संदेह बडे आश्चर्यकी बात है कि ईश्वरने अपने पुत्रकी सत्ताको सी पिछले या पहले पैगम्बर पर द्योतन नहीं किया। प्रत्यतया ऐसे पुत्रकी सत्ताको जैसे ईसू, जो संसारका मोक्ष ाता है। इसके विरुद्ध शोयह नबी द्वारा ईश्वरने प्रत्यक्षरीतिसे को बताया था (देखो इन्जील शोयह बाब ४३ आयत ११):— "मैं और मैं ही ईश्वर हुं और मेरे सिवाय कोई मोक्ष दाता नहीं है"।

इसका खंडन कभी नहीं हुआ किंतु इसका अनुमोदन कुरी इन्जीलसे होता है देखो बाब ४ आयत ८।—

"एक अकेला है और कोई दूसरा नहीं है। ... न कोई बेटा है और न भाई है"।

क्या वही ईश्वर जो यूसूका पिता कहा जाता है, बोल रहा है ? यदि ऐसा है तो वह अपने पुत्रकी क्यों करता है ? और क्या यह वही खुदावन्द है जिसके ईश्वर, मुसलमान अल्लाह और पारसी पूजते हैं। यदि ऐसा है तो उसने इनलोगोंको भी बता दिया कि उसके एक पुत्र है। इसलाम ईसाई वर्ष बाद स्थापित हुआ था और कहा जाता है कि यह पर निर्भर है तो फिर इसका क्या कारण है कि ईश्वर पुत्र होनेसे इनकार किया। यहां पर गौरवे मसाला है। हम इन दोनों बातोंमेंसे एक न एक पर लिये बाध्य होते हैं कि या तो यूसूका आसमानी ईश्वर, मुसलमानोंका अल्लाह और अरदहतका अथवा इन सब धर्मोंकी पुस्तक ऐतिहासिक दृष्टि गई है। सत्य यह है कि इन्जीलें स्वयम् है कि यह गुप्तभाषामें लिखी गई हैं जिसका भाव अत्यन्तावश्यक है। यूसूकी शिक्षा दृष्टांतों द्वारा जिनका भाव बार २ शिष्योंको समझाया जाता और वह प्रायः नहीं समझते थे (देखो मरकसकी आयतें ३१-३२, लूकाकी इन्जील बाब १८ आयतें मरकसकी इन्जील बाब ६ आयत १०) यह भी यूसु उठ जाने के उपरान्त पश्चात् अपने शिष्योंको

के अभागी ज्ञाताओंने स्वयं अपनेको और अपने भक्तों
यायियों)को उस कुंवेके खोदनेके कारण वंचित कर लिया
इसको हर एक स्थानपर इतिहास ही इतिहास दृष्टि पड़ता
अर्थात् यहोवाकी देवनिन्दक और मूर्तिपूजक वनी इसरा-
साथ गाढ़ प्रेमका इतिहास या एक नवीन विज्ञापित
गये ईश्वरपुत्रकी जीवनीका इतिहास जिसने पापियोंको
दिलानेके लिये धारण किया। निरर्थक ही इन्जीलोंके लेखक
बार २ कर अपना गला दुखाते हैं कि जो पढ़े सो समझे
तोंको इन्जील बाब २४ आयत (१) ऐसे विश्वासी हम
ने इतिहासके हैं कि हम इस आज्ञासे प्रभावित नहीं हो
ते हैं। इन्जीलकी पुस्तक प्रकाशित वाक्यमें भी ऐसा ही कहा
देखो बाब २ आयत ७ कि:—

"जिसके कान हों वह सुने कि आत्मा समाजोंसे क्या कहता
है। जो विजयी होगा मैं उसको जीवनके वृक्षमेंसे जो ईश्व-
रीय बागके मध्यमें है, खानेको दूंगा"।

मैं विचार करता हूं कि मिसालोंकी तादाद बढ़ाना निरर्थक
यह पर नितान्त स्पष्ट रीतिसे मानता यह है कि जो
के ऐतिहासिक नहीं है यह इतिहास समझ कर पढ़ी गई है।
ल एक आप और बेटेका नाता हो जहां दोनों सदैवके और
कालीन कहे जाते हैं ऐतिहासिक भावके निषेध करनेका
ण है। जैसा कि मैंने की आफ नालिज में कहा है। हमार

पलटो ही होनी चाहिये, प्रस्तुत है। परित्राण प्रत्यक्ष है।
को इस बातकी चिन्ता थी कि पढ़नेवाले उनके लेखोंको
सिक रीतिसे न पढ़ें, और उन्होंने ऐतिहासिक भावके
करनेमें कोई कसर न उठा रक्खी। नये अहदनामेकी
इस प्रकार जीव (=पूल्) की आत्मिक उन्नतिका वर्णन
है न कि एक व्यक्ति पूल्की जीवनी और शिक्षाका,
जो कई लेखकोंने लिखा हो।

यतः हमारी सम्मति यह है कि हिन्दू शास्त्रोंकी भांति
उके विरोध भी या तो पुस्तकोंके लेखकोंने ऐतिहासिक
के निषेधके लिये इरादतन पैदा किये हैं या दृष्टान्तरूपी
ह्वारोंकी रचनामें स्वयं पैदा हो गये हैं। हम अभी देखेंगे
यह सम्मति केवल ठीक ही नहीं साबित होगी, प्रत्युत
लकी शिक्षाको प्राचीन धर्मों और साथ ही साथ सत्य
निक शिक्षासे परस्पर सहमत करा देगी।

अब मैं इस्लामकी ओर आता हूं जिसको आप मानते हैं
करीब १३ सौ वर्ष हुए कि एक महम्मद नामी व्यक्तिने
रका वादमें इतिहाससे बहुत कुछ सम्बंध हो गया, स्थापित
था। इस्लामका धर्मशास्त्र भी अलङ्कार रूपमें लिखित
उसमें विशेषतः इन्जीलके पुराने अहदनामेकी इबारत
मिलित है और इसके अतिरिक्त कुछ रिवायतें व हदीस
भी हैं इसका विश्वास है कि—एक प्रारम्भकी नक्ली है

सत्यता केवल थोडे ही पुरुषोंको ज्ञात था चाहे यह
[प्रकाश (नर्नेज)से हो या अपने विचार (फिल-
ा स्वतन्त्र विचारवाले) से"
ह भी सूचना हमें प्राप्त होती है कि अरस्तूके मुसल-
इस सम्मतिसे साधारणतया सहमत थे । उदाहरण
: स्वरुपकी यह सम्मति थी कि बुद्धि और ईमानमें
ा विरोधका नहीं हो सकता है । क्योंकि ईमानके
ास्संदेह फिलसफाके नियमोंके प्रतिरूप ही हैं जो
पमें वर्णन किये गये हैं (पूर्वकथित प्रमाण) ।
जो मान प्रारम्भके इसलामी प्रचारकोंके हृदयोंमें
के लिये था वह इस बातकी साक्षी है कि उनको इस
विश्वास था कि हदीसकी आयतोंमें और विज्ञानमें
एक वास्तविक आंतरिक मित्रता है । इस बातका प्रभाव
ाम पर नहीं पड़ता है कि मुसलमानोंका अत्याचार
शताब्दियोंमें ज्ञानके नाश होनेका बहुत कुछ कारण हुआ।
पैगम्बर साहबने हदीसमें बुद्धिकी बहुत सराहनाका
 प्रतिपादन किया है "वह व्यक्ति मृत्युको नहीं प्राप्त
[जो अपने जीवनको ज्ञानोपार्जनमें लगाता है" (दि-
 आफ मोहम्मद) हजरत अलीकी बावत जो यह कहा
है कि उन्होंने ऐसा आदेश किया है कि "फिलसफा
की खोई हुई भेड़ है । यदि तुम्हें उसको काफिरोंसे प्राप्त

जिसके ऊपर अल्लाहने आरम्भ ८
मान्य निर्माण किया था जिसका हाल तो भी
ईसाईयोंको ज्ञात न था। शेष रिवायतोंमें कुरान
की कहानी याजूज माजूज भ्राताओंकी जीवनी
अथवा रहस्य पूर्ण है। इस विषयमें कि यह सब
केवल किस्सोंकी भांति जैसे आदमकी अवस्था
आजकल कोई संदेह नहीं कर सकता है। स्वयं
एक फिर्का था कि जिसने निश्चय इस
कुरान शरीफका भाव केवल अलङ्काररूप है। जैसा
जि० ९ पृ० ८८१ में आया है:—

"इस्लामी फिलासिफाका एक बड़ा प्रश्न यह
अपना सम्बंध कुरान और हदीसमें कहे हुए
रीतिसे स्थापन करे। बहुतसे मुसलमान विद्वान
आलंकारिक भाव (रीति)को यूनानियोंसे हासिल
और जो उपर्युक्त प्रश्नसे थोड़ी बहुत जानकारी
प्रयत्नमें संलग्न थे कि शराके मजमूनको
लायें। जिन लोगोंने इस नियमका पूरा २ प्रयत्न
यानवी (आभ्यन्तरिक) कहाते थे। उच्च कोटिके
और स्वतन्त्र विचारवाले (Free Thinkers)
मानो एक ही परिणाम पर पहुंच गये। एक और
उन सबका स्वीकार था यह था कि शब्दका

देवताओंमें सबसे बडे तीन हैं जो वास्तवमें एकहीमें
जेत हो जाते हैं। यह तीन–सूर्य, इन्द्र और अग्नि हैं जिनके
वर्तमानके लोगोंने बहुत त्रुटियां की हैं। इनकी असलीयत
के लिये धार्मिक विज्ञानके वह परिणाम जो हम
पहले व्याख्यानमें दे चुके हैं, सरल योग्य हैं। उनको
ः मैं यहां पर कहूंगा जिससे प्रमाण देनेमें सरलता हो।
र प्रकार हैं–

–आत्मा एक द्रव्य है जो सर्वज्ञताकी योग्यता रखता है।
वह सर्वज्ञ होता यदि वह उस अपवित्रताके मेलसे जो
साथ लगा हुआ है, पृथक् होता।

–अपवित्र आत्मा इन्द्रियों द्वारा बाह्य संसारसे व्यापारमें
है और आवागमनमें चक्कर खाता है।

–तपस्या और इन्द्रियनिग्रह, परमात्मापन और पूर्णता
ाप्तिके साधन हैं।

दूसरे शब्दोंमें हर एक आत्मामें परमात्मा हो जानेकी योग्यता
ान है परन्तु जब तक पुद्गलसे वेष्टित है तब तक वह
ि जीव। अपवित्र अवस्थामें ही है और तपस्या द्वारा
तसे निष्कृति हो सकती है। अन े बातें, जो मोक्षके
वालेको जाननी आवश्यक हैं वह यह हैं:—

(१) –शुद्ध जीव द्रव्यका स्वरूप।

(२) –जीवात्मा (अपवित्रात्मा)की दशा। और

व स्थापित रहता है परन्तु बुद्ध समय २ पर प्रत्यक्ष
न होती रहती है जैसे सोनेमें उसका विलीन हो

जीवनके लिए शिक्षाका द्वार बुद्धि है चूंकि बाह्य
गुरु तो ज्ञानप्राप्तिके सहकारी कारण ही होते हैं,
कारण नहीं।

बुद्धि सामान्यतः प्रकृतिसे सम्बंध रखती है और
न जीवकी ओर आकर्षित होती है। उदाहरणस्वरूप
बुद्धिमत्ताका देखिये कि जिसको अभी तक आत्मा
हो नहीं लगा है। इसलिये जीव और प्रकृतिके समागम
य रखनमें इंद्र (जीवात्मा) का अपने गुरु बुद्धि।—
ति (पुद्गल या प्रकृति)से भोग करना बांधा गया है।
—फोड़े फुंसियां अज्ञानी जीव हैं जो प्रकृतिमें लिप्त होनेके
अपने वास्तविक स्वरूपसे अनभिज्ञ हैं। यह अज्ञानताके
प्रथम अन्धे हैं।

—परंतु जब उनको ब्रह्मज्ञान अर्थात् इस बातका ज्ञान कि
र ही ब्रह्म है, हो जाता है, तो ऐसा होता है मानो उनकी
खुल गई। इसी बातको, ब्रह्माजीने प्रार्थना पर कृपालु हो
आपके चिन्ह फोड़े फुंसियोंको आंखोंमें परिवर्तित कर दिया
गया है।

—इन्द्र अपने पिताके भी पिता हैं क्योंकि—

—७ हाथ

—और ७ जिव्हायें हैं।

—वह देवताओंका पुरोहित है जो उसके बुलानेसे आते हैं।

—वह भक्ष्य और अभक्ष्य अर्थात् पाक और नापाक दोनों को खा जाता है। और

—वह देवताओंको बल देता है। अर्थात् जिस कदर ज्यादा बलिदान अग्नि पर चढ़ाया जावे उतनी ही देवताओंकी पुष्टि होती है।

न अत्यन्त सुन्दर विचारोंकी विवेचना निम्न भांति है:-

१—तप तीन प्रकारसे होता है—अर्थात्

(क) मनको वशमें लाना

(ख) शरीरको वशमें लाना और

(ग) वचनको वशमें लाना

दि इनमेंसे केवल दोको ही वशमें लाया जावे तो तप अधूरा । और कोई चतुर्थ वस्तु वशमें लानेको नहीं है। अब तपस्याके यह तीन आधार हैं इसलिये उसके तीन पग ये हैं।

—सात हाथोंका भाव ७ ऋद्धियोंसे है। जो तपस्वियोंको हो जाती हैं। मेरु देहमें जो ७ योगके चक्र हैं उनमेंसे हर एक प्रकारकी ऋद्धि (शक्ति) गुप्त रीतिसे सुसुप्त मानी है। तपस्याचरणसे यह शक्तियां जागृत हो जाती हैं। चूंकि

[illegible]की रचना (तरतीब) से स्पष्टतया निम्नलिखित भाव
होते हैं:—

१-हर व्यक्ति अपनी सत्तामें ईश्वर है अर्थात् जीवात्मा ही
 परमात्मा है।
२-शुद्धात्मा पूर्ण परमात्मा होता है क्योंकि वह सर्वज्ञताके
 जो परमात्मापनका चिन्ह है, विशिष्ट होता है।
३-जीवका परमात्मापन उसके प्रकृति (पुद्गल) से संयुक्त
 होनेके कारण दबा हुआ है। और
४-तपस्या वह मार्ग है जो पूर्णता और परमात्मापनको
 पहुंचाता है।

हम इसप्रकार अवलोकन करते हैं कि वेदोंके देवी देवता-
[illegible]के किस्सोंमें जीवनके बाज क्लिष्ट प्रश्नोंको ही अलङ्कारकी
[illegible]में ही प्रस्तुत किया गया है। यह मजमून बहुत रोचक है।
[illegible]तु मैं इस पर ज्यादा ठहर नहीं सक्ता हूं आप इसका उल्लेख
[illegible] लिखी पुस्तक The Practical Path में विशेषतया
[illegible]गे और की ओफ नालिजमें भी, जिसमें विविध जातियोंके
[illegible] देवताओंके रहस्यका अनुसंधान पक्षपातरहित हो कर
[illegible]या गया है। एक दूसरी पुस्तक, जिसका प्रमाण मैं इस
[illegible]संबंधमें देना चाहता हूं The Permanent History of
[illegible] Varsha है जिसका इस व्याख्यानमें भी कई बार
[illegible]ख आया है। इसमें सैकड़ों देवी देवताओंके वास्तविक

शक्तिका प्रयोग केवल हस्तके द्वारा होता है इसीसे शक्तियोंको अग्निके ७ हस्त माना है।

३—सात जबानें अग्निकी ५ इन्द्रियाँ, मन, ... जिनको तपकी अग्निमें स्वाहा या भस्म करता है।

४—चूंकि तपस्या करनेसे आत्माके ईश्वरीय ... मान होते हैं इसलिये अग्निको देवताओं (=ईश्वरीय ... पुरोहित कहा गया है जो उसके आह्वानसे आते हैं।

५—पुण्य और पाप दोनों बंधन अर्थात् ... कारण हैं जिनमेंसे पुण्यसे हृदयग्राही और पापसे ... योनियां मिलती हैं। इन दोनोंको मुमुक्षुको शुद्ध ... (समाधि) के लिये छोड़ना पड़ता है। इसलिये पवित्र (पुण्य) और अपवित्र (पाप) दोनोंका भक्षक कहा है।

६—अग्निका भोजन इच्छायें हैं अर्थात् मनको ... क्योंकि तपस्यासे भाव इच्छाओंके त्यागसे है। इच्छा... करनेसे आत्माके ईश्वरीय गुण और विशेषण प्रगट होते हैं। अलंकारकी भाषामें इन ईश्वरीय गुणोंको देवता ... इसलिये अग्नि पर (इच्छाओंका) बलिदान चढ़ानेसे ... की पुष्टि होती है।

अग्निका यथा स्वरूप है जिसको आप जानते हैं ... हिन्दू ही नहीं प्रत्युत पारसी लोग भी पूजते हैं।...

ति है जो मनके आत्मिक अंधकारको हटाकर उसमें
क सृष्टिकी रचना करती है। विष्णु जो रक्षा करने
धर्म है, जिससे पुण्यकी वृद्धि होती है। यह केवल
सृष्टिकी रक्षा करता है किन्तु और किसी वस्तुकी नहीं,
शिव या महेशसे भाव वैराग्यसे है जो कर्म—पुण्य
र दोनोंका नाश करता है । दूसरी दृष्टिसे ऋषभ धर्म
रमका पुत्र भरत भक्ति, और बैल धर्मका चिन्ह या
है। जम्बूद्वीप मानवजातिका भक्तिभाव है और भारतवर्ष
नियम और रीति हैं । कुरुक्षेत्र दोनों भावोंके मध्यका
। प्रयागसे भाव हृदयसे है । मथुरा खोपड़ीका सहस्रार
और गोवर्धन मन है । हरिद्वार कषायरहित शांतिका
है। गङ्गा यमुना और सरस्वती, इडा पिङ्गला और
ना नाड़ियां हैं । युग तपस्याके दर्जे हैं । और मानुषिक
दक्ष पर्व या साज हैं प्रांतोंका भाव धर्म मार्गके स्थानोंसे
नसे गुजरकर परमानन्द प्राप्त होता है।

ं विचार करता हूं कि आपको हिन्दुओंकी देवताओंकी
िकताका ज्ञान करानेकेलिये इतना लिखना पर्याप्त होगा।
ने आत्मिक पतनके मामलेको सुलझानेका प्रयत्न करूंगा जो
दो और तीन धर्मोंका बड़ा भारी मसला है। सबके
ं [illegible] यह विचार अपने मनसे निकाल डालना चाहिये
ि ससारमें न [illegible] पर [illegible] ऐसा स्थान था जो

एके समय इस किस्सेके वास्तविक रहस्यको प्रस्तुत

—

। अदन जीवके गुणोंका अलङ्कार है । अर्थात् इसमें
को बाग और गुणोंको पेड़ोंसे ज़ाहिर किया गया है ।
ोंमें जीवन और नेकी व बदीके बोधके पेड़ ही मुख्य
। अत एव यह बागके मध्यमें पाये जाते हैं ।
इनसे भाव उस जीवसे है जिसने मनुष्यकी योनि
ई है अर्थात् जो मानुषिक योनिमें है ।
बवाले भाव बुद्धिका है जो आदमके सोनेके समय
ादमकी पसलीसे बनाई गई है । यह एक युक्तियुक्त
लंकार है क्योंकि अन्ततः बुद्धि तो जीवका ही गुण है ।
जेसको नीन्दसे जागने पर मनुष्य अपने पास पाता है ।
तव प्राणियोंमें केवल मनुष्य ही मोक्षप्राप्ति कर सकता
है और इसलिये धार्मिक शिक्षाका वही अधिकारी है ।
पशुओंको बुद्धिकी कमी और शारीरिक तथा मानसिक
न्यूनतायें मोक्षमें बाधक होती हैं । स्वर्ग और नर्कके निवासी
भी तपस्यासे वंचित रहनेके कारण मोक्ष नहीं प्राप्त कर
सके हैं । अतः मनुष्य ही केवल धार्मिक शिक्षाका
अधिकारी है ।

। जीवन वृक्षका भाव जीवनसे है और नेकी व बदीके ज्ञान
का अर्थ संसारकी वस्तुओंका भोगरूपी मूल्य परि[illegible] है ।

राग और द्वेष इच्छाकी दो साधारण किस्में हैं (रोचक वस्तुको अपनानेकी इच्छा = राग और बुरी वस्तुके नाश करनेकी इच्छा = द्वेष)। और इच्छा ही कर्म बंधान और आवागमनका कारण हैं जैसा कि पहले एक व्याख्यानमें दर्शाया गया है अतः नेकी और बदी रूप ज्ञानका फल (राग व द्वेष) माना है।

जीव इस कारण कि वह एक असंयुक्त द्रव्य है अविनाशी है। परन्तु शरीरी होनेके कारण जीवन और मृत्यु उसके साथ लगे हुये हैं। इसी कारण इन्जीलमें आया है (देखो पैदायशकी किताब बाब २ आयत १७) कि 'जिस दिन तू उसका फल खावेगा तो निस्संदेह मर जायेगा'।

यह स्मरण रखना चाहिये कि आदम उसीदिन नहीं मरगया जिस दिन कि उसने नेकी और बदीका ज्ञान रूपी फल खाया बल्कि उसके पश्चात् बहुत वर्षोंतक जीवित रहा और ९३० वर्ष का होकर मरा (किताब पैदायश बाब ५ आयत ५) अतः पैदायशकी किताबके दूसरे बाबकी १७ वीं आयतका असली भाव यही हो सक्ता है कि वर्जित फलके खानेसे मनुष्यको मृत्यु प्राप्त करलेती है।

सांपका भाव इच्छासे है, जिसके द्वारा बुराईकी शिक्षा मिली। यह जीवको धर्मसे हटाकर बुरे कामोंकी ओर खींच लेती है।

वह जानेकी होती; न कि किसी ऐसी वस्तुकी
जान ही नहीं सकता। असलियत यह है कि बिना किसी बडे
हेतुके, किसी वस्तुकी सत्ता स्वीकार नहीं की जा सकती है
इसलिये जिस पदार्थको कभी कोई जान ही नहीं पावेगा उस
सत्ता कभी सिद्ध न होगी। इसलिये आपका 'अनजान' (अज्ञे
अयोग्य) चाहे उसको छोटे अक्षरोंमें लिखिये या बडोंमें,
भद्दी फिलासोफीका हबवा है जिसने कच्ची बुद्धिवाले लोगों
को भयभीत बना रक्खा है। प्राकृतिक संसारमें भी यह ज्ञात
कि पदार्थोंका प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है और वह इन प्रभा
जाने जाते हैं कि उससमय भी जब वह इन्द्रियों द्वारा नहीं
जा सकते जैसे ईथर (Ether) जो दृष्टिगत नहीं होता है प
अपने गुणोंके कारण जाना जाता है। इसलिये यह कहना
कोई वस्तु ऐसी है जो कभी नहीं जानी जायेगी ऐसा कहे
बराबर है कि वह उस अनन्त समयमें जो भूत भविष्यत् वर्तमा
भावापेक्ष है कभी किसी दूसरे पदार्थसे किसी प्रकारका स
पैदा नहीं करती। परन्तु यह केवल उन्हीं पदार्थोंके लिये स
है जो संसार अर्थात् सत्ताकी सीमाके बाहर हैं। इस हेतु
पदार्थका कभी किसी दूसरे पदार्थसे सम्बंध नहीं हुआ और
हो सकता है वह अवश्य असत्यात्मक है।

इस प्रकार हम अपने पुराने परिणाम पर वापस आते
जिसके अनुसार सब पदार्थ जाने जा सकते हैं और जो अ

देशोंमें दूसरी ओर कितना ही विरोध क्यों न हो लेकिन
गर्लि कभी अपनेको आदमियोंके समूह या कम्पनीको
नहीं जानता है कि जहां वह पतका प्रश्न हो। अनुसंधानसे
होता है कि हमारी जानकारीका ज्ञान जिसको हम
ता कहते हैं जीवकी एक आन्तरिक ज्ञाता दशा है जिसको
कारीका अनुभव कहना युक्तियुक्त विशेषण होगा, यहां तक
रा किसी पदार्थका ज्ञान उस पदार्थकी समीपता और
की जानकारीका अनुभव (feeling) है। इस प्रकार मेरे
के ज्ञानमें मेरी अपनी और ज्ञेय पदार्थ दोनोंकी सत्ताका
ल ज्ञान शामिल है। जिस किसीने ज्ञान या आगाहीको एक
र अनुभव समझ पाया है उसको यह बात साफ मालूम होगी
कि आत्मी केवल अपनी ही सत्ता या उस सत्ताकी दशाओंके
परिवर्तनोंके साथ जो उनमें दूसरोंकी समीपतासे अथवा
दूसरोंसे उत्पन्न होती है, ज्ञान कर सकता है। यह कहना
ठीक होगा कि मैं दूसरेकी सत्ताको तो ज्ञात कर सकता हूं
तु अपनीको नहीं। वास्तवमें दूसरेकी सत्ताका ज्ञान स्वयम्
के परिवर्तनोंके ज्ञान पर निर्भर है अतः यह कहना कि किसी
तुका ज्ञाता केवल उसी वस्तुको जानता है, अपनेको नहीं,
त है। सत्य यह है कि मेरा किसी दूसरे पदार्थकी सत्ताका
[illegible] मुझे मेरे [illegible]
[illegible]

स्मृतिका भाव क्या है तो मैं आशा करता हूं कि यह बाउन (Bowne) की निम्नलिखित युक्तियुक्त सम्मति सहमत होनेसे इनकार न करेगा (Bowne's पृष्ठ ४०७-४१०)—

'मनको एक मोमकी तख्तीकी भांति मान लेनेसे, पदार्थोंको उस पर अङ्कित होते हुये खयाल सामान्यतः प्रतीत होता है कि हमको बड़ी होती है। किन्तु उसी समय तक जब तक कि हम यह नहीं करते हैं कि यह तख्ती कहां है और उस क्यों कर अङ्कित होते हैं और यदि ऐसा हो भी तो ज्ञान क्यों कर प्राप्त होता है? अनुभव और तात्कालिक पुर्वज भेजेकी नाडियोंके परिवर्तन हैं। जगतका जो कुछ हाल हमें ज्ञात है वह सब इन तबदीलियोंसे है परन्तु यह तबदीलियां, उन इनका कारण माने गये हैं नितान्त दूसरे ही भांतिकी हैं। यदि हम मनको प्रकाशमें और बाह्य पदार्थों पर सोचें तो खयालको कुछ संतोष सकेगा। परन्तु हम जानते हैं कि मन खोपड़ीकी अंधेरी कोठरीमें अगम्यसे साक्षात् करता है और जिस पर भी पदार्थोंके पास नहीं आता किन्तु कुछ नाडियोंकी तबदीलियोंके समीप आता है जिनकी सत्तासे विशेषत वह नितान्त अनभिज्ञ है

ज्ञान शक्तिको अपरिमित साबित करता है । अतः हर एक जीवात्मा स्वभावतः सर्वज्ञ है ।

यदि यहां तक आपने मेरे व्याख्यानको समझ लिया है तो आप इस बातको भली प्रकार जान जायेंगे कि प्रकृतिवादियोंका विचार जो एक प्रकृतिके परमाणुमें कल्पित चेतनासे प्रारम्भिक अंशसे मानुषिक चेतनताको गढ़ना चाहते हैं कितना मूढ़ है । हम जानते हैं कि बुद्धिकी तीव्रता, मनके धुंधलापन मैल और सुस्तीके हटनेसे होती है और यह धुंधलापन इत्यादि एकसे अधिक पदार्थोंके मिलनेसे उत्पन्न होनेवाले संयुक्त पदार्थोंमें ही सम्भव हो सकते हैं कि जहां एक वस्तु दूसरी वस्तुके गुणोंको गन्दा और कलुष कर देती है । परन्तु प्राकृतिक परमाणुमें मानी हुई चेतनाके साथ कोई धुंधला करनेवाला कारण लगा नहीं हो सकता है क्योंकि परमाणु एक असंयुक्त अखण्ड पदार्थ है । इसलिये यदि चेतनाको परमाणुका गुण माना जाय तो परमाणुमें रहनेवाली आत्माको तीव्र बुद्धिवाला होना चाहिये यह युक्ति प्राकृतिक परमाणुओंकी चेतनाकी नितान्त मूढ़ता साबित करती है । मेंढ़ेकी चेतनताका ख्याल भी जीवकी समझ और ज्ञानकी शक्ति पर लिहाज करते हुये इससे अच्छा नहीं सूझता यदि कोई पुरुष इस बात पर ज़रा देर तक विचार करेगा कि ज्ञान अर्थात् स्मरण ज्ञान अन्वेषण वर्गीकरण किस तरी मुकाबिला तुलना अनुमान अथ विचार इत्यादि इन्द्रि और

तो यह विदित है कि वाह्य पदार्थ बहुत दूर हैं । चित्रों और मानसिक अङ्कों इत्यादिका कथन यहां सब निरर्थक हो जाता है। क्योंकि जिन पदार्थोंमें चित्रोंका प्रश्न उठा करता है उनकी सत्ता ही यहां असम्भव है। यह भी साफ नहीं है कि हम अंधकारमेंसे किसी भांति प्रकाश और सत्य संसारमें पुनः प्रवेश कर सकेंगे । हम प्राकृतिक विज्ञान और इन्द्रियों पर पूरा २ भरोसा रख कर अन्वेषणमें संलग्न होते हैं और तत्काल वाह्य पदार्थसे एक नसोंके चक्करमें पड़ जाते हैं कि जहां पर बाहरी पदार्थके स्थान पर नाड़ियोंके परिवर्तन रह जाते हैं जो अपनी सत्ताके अतिरिक्त और किसी पदार्थके सदृश नहीं है। अन्ततः हम अपने तई खोपडीकी अंधेरी कोठरीमें पाते हैं। अब वाह्य पदार्थ नितान्त अदृष्ट हो गया और ज्ञान अभी प्राप्त नहीं हुआ है। कट्टरसे कट्टर प्रकृतिवादियोंके खयालसे भी वाह्य पदार्थोंकी जानकारीका यन्त्र केवल नाडियोंका परिवर्तन है । परन्तु इन परिवर्तनोंको बाहरी संसारके ज्ञान रूपमें बदल देनेकेलिये यह आवश्यक है कि हम एक अनुवादक नियत करें जो इन परिवर्तनोंके भावको समझ सके । परन्तु वह अनुवादक भी स्वयम् ऐसा हो जो संसारका भाव अपनेमें रखता हो । और यह परिवर्तन अथवा चिन्ह वास्तवमें एक प्रकारकी क्रिया है जो जीवके आन्तरिक ज्ञानका प्रकाश कराती है। चूंकि सर्व

होगी, जिसमें कोई अल्पबिन्दुओंका समूह किसी स्थान पर
उससे ज्यादा नहीं ठहर सकता। या आप उनका उदाहरण
ऐसी किरणोंसे दें जो स्वयम् स्थिर रहनेवाली नहीं है। अब
जानते हैं कि कितनी शिक्षा और कितने वर्षोंके परिश्रम
के बाद या गोपेन होकर या स्वाभाव आँखका मन बनता है
अभी आपने प्रोफेसर ब्राउनकी पुस्तकसे ज्ञात किया है कि
और नाड़ियोंके परिवर्तनोंके अनुसार क्या भाव है। अब
आपने जो इन सब बातोंको जाना है यह पूछता हूं कि क्या
कोई खेल, तरीका जानते हैं या किसी प्रकारसे इलाज कर
ते हैं कि जिससे चेतनताकी दशा भागती हुई किरणके
का आन्तरिक दोष कुलका कुल ज्योंका त्यों एक इसीप्रकार
री फिल्म पर जो उसके पीछे लगी हुई चली आ रही है
र जिसको पीछेसे एक और उसी प्रकारकी किरण देखता
है तत्काल मुद्रित हो सकता है। केवल यही नहीं किन्तु
आप इस बातका भी विचार कर सकते हैं कि ऐसा
सम्बन्धी कार्रवाई क्यों कर घंटों तक बिजुली किसी रफ्तार
छूटते हुवे तारोंकी भांति इन शीघ्र नाशवान् और स्वयम् दिखा
नेवाले आश्चर्यवान भेजेके तरंगोंकी सहायतासे और
नी स्थिर रहनेवाली बुद्धिकी अनुपस्थितिमें जारी रह सकती
मुझको तो यह सबकी सब घटना और कारनामा प्रतीत होती
और इस कारण मैं इसको असिद्ध मानता हूं

वधानके वर्तमान समयके साथ न दौड़ने और उसके व्यतीत
बीते हुवे समयपर क्षण भर रुक जाने या भूत कालकी ओर
आकर्षित होनेसे प्राप्त होती है। अब यह जानना उचित है कि
स्मरण शक्ति बनी बनाई तसवीरों या फोटूके चित्रोंकी भांति
नहीं है क्योंकि न तो नेत्र होनें और न शरीरके किसी और
भागमें किसी स्थान पर कोई तसवीरखाना या फोटूकी एलबम
(चित्रोंके रखनेकी किताब) नहीं है वह स्वाभाविक शक्तियोंकी
भांति है जिनसे ऐन्द्रिय प्रत्यक्ष पुनः नवीन बन सकता है इस
लिये ऐन्द्रिय प्रत्यक्षके गुणों (चिन्हों) से ही स्मरणके विशेष-
पनका भी पता चल सकता है। किन्तु ऐन्द्रिय प्रत्यक्ष तो वह
आन्तरिक अनुभव है जो बाह्य उत्तेजकके द्रष्टाकी चेतना पर
पड़नेवाले प्रभावसे उत्पन्न होता है। इसलिये स्मरण भी पूर्व
अनुभूत ऐन्द्रिय प्रत्यक्षका पुनः निर्माण-कर्ता है, यद्यपि वह
इस समय आन्तरिक उत्तेजन क्रियासे उत्पन्न होता है। शरीरके
वह भाग जो ऐन्द्रिय दर्शनमें क्रियावान होते हैं नाड़ियोंके जाल
या भेजेके दर्शनसम्बन्धी स्थान हैं जहां कि अनुभव शक्ति
विशेषतया तीव्र होती है। भेजेके इन दर्शनसम्बन्धी स्थानोंके
समकक्ष सम्बन्धमें दो प्रकारके कार्य हैं।

१- ऐन्द्रिय ज्ञानमें वह बाह्य उत्तेजक क्रियाको आत्मा तक
पहुंचाते हैं।

२- स्मरणमें वह आन्तरिक मानस क्रियाको ज्ञानेन्द्रिय

व मन एक इन्द्रियसे जुडा होता है तो दूसरी इन्द्रियोका
उत्तेजक आस्रव (Sensory stimulus) उस तक नहीं
पाता है। परन्तु जब यह खिचाव या तनाव ढीला पड़
है तो जीवन क्रियाके दबावका समय अथवा ताज बदल
है और मन्द २ क्रियाएं व वक़्फ़े (अन्तर-Rest)
स्त हो जाते हैं यह क्रियाएं और आन्दोलन भेजेके दर्शन-
धी स्थानोंकी सहायतासे स्मरणको पुनर्जीवित करते हैं जो
जनापानें Reproduction (शब्दार्थ, फिर निर्माण करना)
जाता है। दूसरे शब्दोंमें यह कहना उचित होगा कि स्मरणमें
जक और आन्दोलन क्रियाएं मनके अन्दरसे आती हैं
ऐन्द्रिय प्रत्यक्षमें बाह्य पदार्थोंसे। दोनों अवस्थाओंमें भेजेके
न केवल ऐन्द्रिय दर्शनका वस्ता संचरित करते हैं जैसा कि
ले कहा गया है। अतः स्मरणके रोग दो प्रकारके हो
ते हैं। या तो वह अवधान (ध्यान) के अनुक २ आन्दो-
ं अथवा क्रियाओंको स्वीकार करनेमें असमर्थ रहनेसे
न्न होंगे या भेजेके घाव इन क्रियाओंको दर्शनकरी बलोंसे
त रक्खेंगे। परन्तु इसका भाव यह नहीं है कि स्मरणका
ति (पुद्गल) से नितान्त कोई सम्बध ही नहीं है। यह
चार कि स्मरण और प्रकृतिमें कोई सम्बध नहीं है इतना ही
थ्या होगा जितना यह कहना कि स्मरण केवल प्राकृतिक
... ... उपज है ... ... स्मरणके आन्तरिक

योंसे उत्पन्न होते हैं और इस कारण हमारे जीवनकी नाप
दशायें हैं। यदि इसके विपरीत होता अर्थात् दुःख
हमारी सत्ताके गुण होते तो वह हमारी
और कषायोंके हलका और मंद पड़जाने पर उत्पन्न होते
क्योंकि जो पदार्थ किसी वस्तुका गुण है वह स्वयं
कारणके ही अपने रोकनेवाले कारणोंके हटजाने पर
हो जाता है। रंज और कष्ट दोनों वाह्य कारणोंसे,
निम्नलिखित दो प्रकारके हैं, पैदा होते हैं।

(१) अनिष्टसंयोग अर्थात् मिलाप ऐसी वस्तुसे जो ग्राही नहीं है।

(२) इष्टवियोग अर्थात् पृथक्ता ऐसे पदार्थसे जो ग्राही और रोचक है।

दुःख और रंज किसी दशामें उस समय नहीं पैदा होते
हम अपनी सत्तामें स्थिर हों अर्थात् इन कारणोंमेंसे एक
दूसरेके निमित्तके विना नहीं उत्पन्न होते। वास्तवमें
कि शारीरिक दुखका सम्बन्ध
प्रकारकी वस्तुओं व प्राकृतिक तत्वोंके बाहमी (आपस
कीमियाई कर्मका जो शरीरमें होता रहता है प्रभाव है।

जीवके अन्दरसे कोई स्वयं उत्पन्न होनेवाला पदार्थ।

उपरान्त व्याख्यासे हम यह कहनेके अधिकारी हैं कि

ानंदका कोष है जिसको वह बाह्य पदार्थोंसे प्राप्त करनेका
क प्रयत्न करता है।

फिर क्या कारण है कि जीव अपने इस स्वाभाविक आनं-
अनुभव नहीं कर सकता है? इस जटिल प्रश्नका उत्तर
कि हमारी त्रुटियों और मूढ़ताके कारणसे जीवात्माके
ाविक गुण कार्यहीन हो गये हैं।

जिस हद तक कि इन त्रुटियों, मूढ़ता या कषायमयकी
ं हानि होती है उस हदतक जीवके स्वाभाविक गुण प्रकट
हैं। वास्तवमें जीवात्मा पूर्णानन्द और सर्वज्ञताका अनुभव
ा जब कि वह शक्तियां जो इससमय इन गुणोंको रोके हुये
तान्त नष्ट हो जावेंगी। और अमरत्व भी जीवके उन
यों पर विजयी होने का पारितोषिक होगा।

जीवको सर्वज्ञ, सुख और अमरत्वका स्वामी कहना उसको
ं खुदा या ईश्वर (ब्रह्म) कहना है क्योंकि ईश्वरकी सत्तामें
बड़े गुण यही पाये गये हैं इससे पवित्र इंजीलके इस
त्यका कि "वह पत्थर जिसको मेमारोंने रद्दी समझकर
 दिया निखरका सरताज हुआ है" (देखो जबूर ११८ आयत
व मत्तीकी इंजिल बाब २१ आयत ४२) पूरा समर्थन
ता है।

वास्तवमें वही पत्थर आत्मा जिसको मेमारों (प्राकृतिक
ान बनाओ) ने फेंक दिया था वही विज्ञानका छत्र साबित

असहमत-

तब यह प्रकृतिके लगायका प्रभाव है जो अवस्थाओंका जिम्मेवार है जो एक पवित्र आत्मामें नहीं -क्योंकि विविध द्रव्यों या तत्त्वोंके आपसमें मिल जानेका परिणाम उनके असली गुणोंका सीमित हो दब जाना ही हुआ करता है जैसे हाइड्रोजेन जेन जो नैसर्गिक दो प्रकारकी वायु है परन्तु जब एक हो जाती हैं तो इनके स्वाभाविक गुण में परिवर्तित हो जाते हैं। परन्तु इस प्रकार गुण नहीं हो सकते हैं। पदार्थोंके पृथक् होने पर यह पुनः पूरे समर्थताको प्राप्त हो जाते हैं (देखो इंडियन रिव्यू पत्र १५५)। गौर करनेसे ज्ञात होता है कि अपवित्र अपने ज्ञान, दर्शन व आनन्दके असीमित गुणोंका पूरा नहीं उठा सकता है जिससे प्रकट है कि इन गुणोंकी वाली शक्तियां उसके साथ लगी हुई हैं। इस प्रकार किसकी शक्तियोंका पता चलता है। अर्थात्

१-वह शक्ति जो ज्ञानको रोकती है (यह कहलाती है)।

२-वह जो दर्शनको रोकती है (दर्शनावरणीय) और

३-वह शक्तियां जिनके कारण वास्तविक सांसारिक दुख सुखका अनुभव हुआ करता है (वेदनीय)।

इनके अतिरिक्त विचार करने पर एक और शक्तिका

परन्तु भूतकालमें जीव एक पवित्र अवस्थामें [illegible] कभी नहीं रहा होगा क्योंकि शुद्ध द्रव्य स्वरूपको प्राप्त करनेके बाद यह फिर कभी आवागमनके चक्करमें नहीं गिरा होगा। इसका कारण यह है कि जीव अपने शुद्ध स्वभावमें पहुंचकर, [illegible] अपरिमित सुखका भोगनेवाला और समान [illegible] गुणोंका कोष होता है जिनका किसी प्रकारके आवरणोंके न होनेके कारण पूरा २ प्रादुर्भाव उसको अपनेमें होना आवश्यक है। ऐसे सत्त्व सम्पूर्ण जीवका एक पौद्गलिक शरीरमें कैद करनेके लिये अपने उत्कृष्ट स्थानसे गिरने और इस प्रकार अपनी पूर्णताको विविध भांतिसे सीमित करनेका स्वभाव एक ऐसी झूठी बात है कि इसको बुद्धि एक क्षण मात्रके लिये भी नहीं स्वीकार कर सकती है। इससे यह परिणाम निकलता है कि इस जन्मसे पहले भूतकालमें जीव कभी सिद्धत्वको नहीं प्राप्त हुआ था। और यह भी प्रकट है कि जीवोंके विविध अवस्थाओंमें पैदा होनेकेलिये यह आवश्यक है कि ऐसी कोई शक्ति या शक्तियां हों कि जो उनको विविध प्रकारके गर्भाशयोंमें खींच कर ले जा सकें। परंतु ऐसी शक्तियोंका जो जीवको खींचकर एक शरीरसे दूसरे शरीरमें ले जावें इस किसी प्रकार स्वभाव होवे अगर इस प्रकार नहीं कि वह एक प्रकारका द्रव्यका बाद हो। [illegible] यह स्पष्ट है कि [illegible] जन्म लेनेके पूर्व जीवके साथ [illegible] पुद्गल का लगाव [illegible] आवश्यक है

लता है जिसके प्रभावसे सच्चा धर्म्म (अर्थात् साइन्टिफिक यार्थ सत्य) हृदयग्राही नहीं हो सकता। यह दो प्रकारकी है। क तो सत्यको हमें स्वीकार ही नहीं करने देती और दूसरी वह ो सत्यके स्वीकार होने पर भी हमें उस पर कर्तव्यपरायण नेसे रोकती है। इनमेंसे प्रथम प्रकारकी शक्तियोंका भाव पक्ष-ात, हठधर्मी, मिथ्यात्व और उन तमाम बुरेसे बुरे (अनंतानुबंधी) पायों (क्रोध मान माया लोभ) से है जिनकी तीव्रता व न्मत्तताके कारण बुद्धिको, जो एक ही यन्त्र सत्यान्वेषणका है, त्यताके खोजका अवसर ही नहीं प्राप्त होता है। और दूसरे कारकी शक्तियोंमें अनंतानुबंधी प्रकारके अतिरिक्त और अन्य कारके बुरे कषाय (क्रोध मान माया लोभ) सम्मिलित हैं जो र्य्य और वीर्यके नाश करनेवाले हैं और उन पदार्थोंके ग्रहण रनेमें बाधक होते हैं जिनको हम लाभकारक और उत्तम जानते और कुछ छोटे २ दोष (नोकषाय) जैसे हँसी रति इत्यादि शारीरिक आदतें व कामनाएं भी जो मनको काबूमें लानेमें ाधक होते हैं। यह सब मोहनीय कर्म्म कहलाते हैं इनके दो कार हैं।

१—दर्शनमोहनीय, जिनकी उपस्थितिमें सत्य धर्म (दर्शन) प्राप्त नहीं हो सकता है। और

२—चारित्रमोहनीय, जो सत्य धर्मको तो प्राप्त हो जाने देते हैं किंतु उस पर कर्तव्य परायण नहीं होने देते हैं।

चाहिये। अबतक मुमुक्षु अपने जीवनका उत्तमसे
न संसारकी सेवा उपदेश दान इत्यादिके रूपमें देता
परन्तु वह अब अपना परलोक सुधारनेके लिये इससे
करता है। साधुकी अवस्थामें इसका अब अपने बड़े
अर्थात् इच्छा और कषायोंके नाशके अतिरिक्त और
पदार्थसे संबंध नहीं है जो व्रत कि अब वह पालन करता है
ो है जिन को वह गृहस्थ दशामें भी पालता था परन्तु वह
ी कठिनतासे पाले जाते हैं। उनके अतिरिक्त वह
–चलने फिरने
–बात चीत करने
–खाने पीने
–उठाने धरने
–पाखाना पेशाब आदिके करनेमें बड़ी सावधानीसे कार्य
ा है कि किसी प्राणीको कष्ट न पहुंचे। वह अपने मन वचन
शरीरको वशमें लाता है जिससे वह सांसारिक व्यवहारमें
ग और १० प्रकारके उत्तम धर्मोंपर कर्तव्यपरायण होता है
निम्न प्रकारके हैं।

१–क्षमा २–मार्दव (नम्रता) ३–आर्जव (ईमानदारी)
शौच। मनसे लालचका निकालना ५–सत्य ६–संयम
तप, ८–त्याग, ९–आकिंचन उदासीनता) १०. ब्रह्मचर्य
नमके साथ 'उत्तम' शब्द [illegible] या उत्तम या सर्वोत्तम

नारमें कोई ऐसा कार्य्य नहीं है जिसको मनुष्य नहीं कर
यदि वह एक बार अपनी हिम्मत उसके करनेमें लगा
। यदि पूर्ण कृतकृत्यता हमको तत्काल नहीं भी मिले तो
यु हो जानेसे परिश्रम निरर्थक नहीं जाता है। ज्ञान और
का उत्तम फल जीवके साथ एक जन्मसे दूसरे जन्म
कार्माण शरीरके उत्तम प्रकारके परिवर्तनोंके रूपमें जाता
र आगामी जीवनके शरीर संबन्धोंके निर्माणमें पूरा
लेता है। तब मनका उत्साह और प्रसन्नता ही आवश्यक
, सत्य ज्ञानके प्राप्त होनेपर कृतकृत्यताके लिये है। यदि
कुशल कानूनवेत्ताको जब कि वह गोदके बच्चेकी दशामें
न पुस्तकोंकी संख्या, जिनको उसे बादमें पढ़ना होगा, बताई
और उसको उसपर विचार करनेका समय दिया जाता
निश्चय है कि वह भयसे मृत्युको प्राप्त होगया होता। परन्तु
र मध्य बहुतसे ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने केवल कानूनहीमें नहीं
और विषयों और शिल्पोंमें भी ख्याति प्राप्त की है। और
नी नहीं है कि मोक्षके पथिकके मार्गमें केवल कष्ट और
ही हों। यह सत्य है कि कुदरतमें गुलाबका फूल बिना
के नहीं मिलता है, परन्तु यह भी इतना ही सत्य है कि कोई
लों कांटा भी कुदरतमें ऐसा नहीं है जो फूल तक हमको
पहुंचनेदेगा यदि हमको उसके अन्वेषणार्थ ढंग ज्ञात हो और
उसकी तलाशमें कर्तव्यपरायण हों। यदि आप कार

जीव अपरिमित देवेंद्र समूहकी महिमाको और ... मस्तकसे पूजनीय चक्रवर्तीके चक्रको तथा तीवा... तमाम लोक जिसने ऐसे तीर्थंकर पदको पाकर ... पाता है।"

अतः केवल यह कहना शेष रह गया है कि जो ... आजके व्याख्यानमें हमने निकाले हैं यह सब जैनसि... सम्मिलित है जो विज्ञानसे नितांत सहमत पायाजाता है।। बहुतसे परिणामोंको हम अन्य धर्मोंमें भी पावेंगे जब अन्वेषणका समय आवेगा।

कभी नहीं विस्मरण करना चाहिये कि सत्य आत्मज्ञान
त्रका मूल अर्थात् नित्य जीवनके सदैव हरे रहनेवाले
असली बीज सम्यग्दर्शन है, जिसके निमित्त रत्नकरंड-
ाचारमें जो एक बहुत प्राचीन शास्त्र है ऐसा कहा है:—
तीनों लोक और तीनों युगोंमें जीवोंका सम्यग्दर्शनके बराबर
ल्याणकारी कोई दूसरा नहीं है और न मिथ्यात्वके सदृश
ई अकल्याणकारी है। शुद्ध सम्यग्दृष्टि जीव, कान्ति,
ताप, विद्या, वीर्य, कीर्ति, कुल, वृद्धि, विजय और
भवके स्वामी, कुलवान, धर्म अर्थ काम मोक्षके साधक
ौर मनुष्योंमें शिरोमणि होते हैं। सम्यग्दृष्टि जीव स्वर्गोंमें
ीर्थंकर भगवानके भक्त होते हैं, और आठ प्रकारकी
ऋद्धियोंसे तुष्टयमान और अतिशय शोभायुक्त होकर देवों
और देवांगनाओंकी सभामें बहुत समय तक आनंद भोगते
हैं। निर्मल सम्यग्दृष्टि पुरुष सम्यक्त्वके प्रभावसे चक्रवर्ती
राजा होते हैं जिनके चरणोंपर सब राजा मस्तक झुकाते हैं,
और जो नौ निधियां चौदह रत्नों और ६ खंडोंके स्वामी
होते हैं। सम्यक्दर्शन ही है शरण जिनकी ऐसे जीव जरा-
रहित, रोगरहित, भयरहित, बाधारहित, शोक भय
शंकारहित परम प्रकर्षताको प्राप्त हुआ है सुख और ज्ञानका
विभव जिसमें ऐसे और कर्ममलरहित मोक्ष पदको प्राप्त
होते हैं। (जिनेंद्रका है भक्त जिसके ऐसा भव्य मोक्षगामी)

यह प्रकृतिके नियमोंका रंचमात्र भी साथ न छोड़े ताकि वह
विरुद्धतासे जो विचारावतरण और यथार्थ प्राकृतिक क्रिया
मध्य पाई जाती है बच सके। अतः मेटाफिजिक्स वह वि
जो अनुभूत घटनाओं पर विचार करनेकी कार्रवाई या उ
फल है जो अपने अन्तिम स्वरूपमें एक सम्पूर्णरूपेण
ज्ञान है जो समस्त पदार्थोंका बोध करानेको समर्थ हो और
इस कारणवश उच्चतम उद्देशके हेतु व्यवहृत किया जा स
यह व्याख्या हमारे अर्थ अत्यन्तावश्यक है कारण कि ह
इस समय हर प्रकारके मानसिक विचारावतरणसे कोई
नहीं है। हमको सुतरां केवल उस विचारसे गरज है जि
सम्बन्ध किसी न किसी प्रकारसे धर्म हो। हमारा कोई प्र
मानुषिक विचारावलीके इतिहास लिखने अथवा धर्मके स
में विविध देशो और भाषाओंके विद्वानोंकी सम्मतियोंको
त्रित करनेसे भी नहीं है। और न हमें इतना अवकाश ही

सालाकी योग्यताके बाहर है।

अत हम अपना खोजका व्यावहारिक प्रश्न
सम्बन्धी तक यथाविन रक्खेंगे अर्थात उन दर्शनोंतक
प्रचलित तमाम सम्बन्धित है। और उनमेंसे भी हम किस

चतुर्थ व्याख्यान।

दार्शनिक सिद्धांत।

आजके व्याख्यानका विषय दार्शनिक सिद्धान्त (Metaphysics) है। इसमें कुछ संशय है कि इस शब्दका यथार्थ अर्थ क्या? परन्तु प्रारम्भमें यह अरस्तुके सैद्धान्तिक विषयमें व्यवहृत किया गया था जो उसकी लिखित पुस्तकोंके संग्रहमें पदार्थ ज्ञान (Physics) की पुस्तकके पश्चात् व्यवस्थित था। परन्तु इस शब्दका भाव कुछ भी क्यों न हो मेरे विचारमें, हम विना किसी संशयके उसका संबंध उस ज्ञानसे कर सकते हैं जो पदार्थ ज्ञान (Physics) से उपरान्त है। अस्तु। फिजिक्स तो सत्तात्मक (विशेष) पदार्थोंके ज्ञान से सम्बन्ध रखता है और मेटाफिजिक्स उनके भेद और संबंध स्थापित करता है एवं अन्ततः उनको एक व्यवस्थित योग्य ज्ञानके तौर पर तरतीब देता है। जैसा हम पहले कह चुके हैं सिद्धान्त और विज्ञानका जोड़ा है अर्थात् उनका आपसका [illegible] सहायक है। कारण कि विज्ञान [illegible] को [illegible] समस्याओंसे बचनेके हेतु यह आवश्यक है कि [illegible] पूर्ण रूपमें समाधान करनेका प्रय[illegible] सिद्धान्तका चाहिये कि

कि वेदांती लोग उसका शब्दार्थ लगाते हैं। इसलिये ऐसे होनेका अनुभव होते ही मुक्ति तुरन्त प्राप्त होती है। वेदान्तका सिद्धान्त "वह तू है" है न कि "वह तू हो-" इस ज्ञानकी प्राप्तिके साथ ही साथ जीवात्मा विलय जाता है (Deussen)।

वेदान्तकी मुख्य शिक्षा निम्नप्रकार है:—

(क) संसारका मायारूप होना।

(ख) केवल एक पदार्थ या आत्माका सत्त्वतः [illegible]

(ग) ज्ञानद्वारा मुक्तिका प्राप्त होना।

इनमेंसे प्रथम विषयके बारेमें यह लिखना उचित होता है कि अनुमान या न्याय (Logic) ने कुछ [illegible] नियम मानने पड़ते हैं और हमारे लिये दार्शनिक [illegible] प्रयत्न करना जब तक कि हम उनको स्वीकार न करें, [illegible] यह सिद्धांत एस० एन० बनर्जीद्वारा रचित न्यायकी एक [illegible] सी पुस्तिकामें जिसका नाम "ए हैंड बुक ऑफ डि[illegible] लोजिक" है, योग्यताके साथ वर्णित है, और इसप्रकार है

(१) यह कि हमारे मनसे पृथक् एक पौद्गलिक [illegible] [illegible] है।

[illegible] हमारा मन पदार्थोंका ठीक [illegible] [illegible] उसी प्रकार [illegible] ही है जैसे वह [illegible]

'पुरुष' संसारमें होता जैसा कि वेदान्तियोंका मत है, तो मनुष्यको आनंद प्राप्त होनेसे सबको आनंद प्राप्त हो जाता, एकको दुख होनेसे सबको दुख होता । और यही हालत व जातिकी अवनति तथा जातिकी शुद्धता व आरोग्यता जन्म व मरणके हेतुसे लोगोंकी होती । इस कारण सब संसारमें एक ही पुरुष नहीं है । वस्तिकरूप, [illegible] संगति या एकांतकी अनेकताके [illegible] (सि० सि० फि० प० २५६) मेरे [illegible] विरोधावलीकी प्रबलताको अस्वीकार करना सम्भव नहीं है।

वेदांतके तृतीय सिद्धांतके विषयमें कि मुक्ति ब्रह्मज्ञान है प्राप्त होती है मुझे ऐसा विदित होता है कि यहां भी बंध मोक्षके संबंधमें एक बड़ा भ्रम उपस्थित है। इसमें कहा गया कि संसारमें केवल एक ही आत्मा है और वह एक अमिट सत्ता है। तब फिर भला किसकी मुक्ति होगी। किसके लिए यह सब शिक्षा और प्रचारकाण्ड रचा गया। और उनके विषयमें जिनकी मुक्ति भूतकालमें हो चुकी है। ऐसे कोई [illegible] क्या कहा जाय? क्या वह अब भी [illegible] नष्ट [illegible] हो गए? यह भ्रम आयागमनके [illegible] और भी वह [illegible] आत्माओंका केवल एक [illegible] एक ही अखण्ड

के रचयिताके यथार्थ उद्देश्य तक नहीं पहुंच पाया ! आपको
र दर्शनके स्थापक कपिल मुनिके बताए हुए तत्त्वोंका स्मरण
गा। तो भी आपकी सुगमताके लिए मैं उनको यहांपर पुनः
ख देता हूं:—

पुरुष (१) प्रकृति

व्यक्त (२) अव्यक्त

महत (३)

अहंकार (४)

सत्वके साथ तमसके साथ

पंच ज्ञानेन्द्रिय (६–१०) } मन (५) { पंच कर्मेन्द्रिय (११–१५)

शब्द (१६) स्पर्श (१७) रूप (१८) रस (१९) गंध (२०)

आकाश (ईथर) (२१) वायु (२२) अग्नि (२३) जल (२४) पृथ्वी (२५)

आपके सामने यह नकशा उपस्थित है जिसमें तत्त्वों और उनके स्वरूपोंका क्रम लिखित है जो महत (३) से प्रारंभ होता है, क्योंकि पहिले दो तत्त्व अनादि हैं। कपिल मुनिके मतानुसार

दर्शनीय पदार्थ नहीं होता है।	कौतुक बन्द हो जाता है अतः कोई दर्शनीय नहीं रहता है।
(३) जागने पर पहिले पहिल बुद्धिका प्रकाश होता है	(३) संसार क्रममें सर्व प्रथ महत (बुद्धि), प्रकाशमा होती है।
(४) बुद्धिसे अहंकारकी उत्पत्ति होती है।	(४) फिर महत् अहंकार रूपान्तरित हो जाती है
(५) अहंकारसे 'मैं' का कार्य्याश्रय अर्थात् मन व ज्ञान व कर्म इन्द्रियां विकसित होती हैं।	(५) अहंकारसे मन व पंच ज्ञानेन्द्रियां व पांच कर्मेन्द्रि अर्थात् हाथ पैर आदि बनते
(६) तब ऐन्द्रिय दर्शन (चेतनताका भान) होता है।	(६) अहंकार इन्द्रियग अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, र गंधमें परवर्तित हो जाता है
(७) ऐन्द्रिय दर्शनकी सामग्री बाहिरी मूर्तिक ससाररूपमें परिवर्तित हो जाती है।	(७) इन्द्रियज्ञान अर्थ गंध आदिके सूक्ष्मतत्त्व ओंका पंच स्थूल भूत अर्थ आकाश, वायु, अग्नि, और पृथ्वीमें परिवर्त जाता है जिनका यह सं बना है।

। बुद्धिका प्रकाश होना ।
। इस बुद्धिमें अहंकार अर्थात् 'मैं' के लेशमात्रका उठना ।
मैं अर्थात् मन, व ज्ञान व कर्म इन्द्रियोंकी कृतियों
और गुणोंका विकसित होना ।
। इन्द्रियोंका उत्तेजित होना अर्थात् ऐन्द्रिय दर्शन या
वेदना रस गंध आदि ।
। ऐन्द्रिय वेदनाकी सामग्री रस गंध इत्यादिके सूक्ष्म
तन्मात्राओंका पंच स्थूल भूतरूप जिनके पदार्थ बने
हुए हैं परिवर्तित होकर बाहरकी ओर डाले जाना ।
ई और मायावादियोंके इस मतको अपनी दृष्टिमें रक्खें
संसार देखनेवालोंके मनमें है और उसके पदार्थ ऐन्द्रिय
। हो हैं जिनको हम मनद्वारा जानते हैं तो आपको कपिल
। सिद्धान्त समझनेमें कोई दिक्कत ज्ञात नहीं होगी (इन
के तत्वोंकी कलावलीकी तुलना साथसाथ लिखकर जब
करें जिससे यह खूब विदित होता है कि कपिलमुनिके
: रहते हुए मनुष्यको संसारका ज्ञान होना माना है:—

होकर रहता हुआ मन	संसारका कौतुक
जगत और मुक्तावस्थाका क्रमवार प्रकट होना ।	(१) संसारकी सृष्टि और नाशका क्रमवार प्रकट होना ।
मुक्तावस्थामें चेतनका नाश नहीं होता है मुक्तमें यह कोई	(२) प्रलयमें पुरुषका नाश नहीं होता है बल्कि संसारका

ना असंभव हो तो उतना ही असंभव उसको असत्यता
ादित करना होगा। और यदि स्वप्न अथवा भ्रमका दृष्टांत
ा जावे जो मृगतृष्णा अथवा नटविद्या (इन्द्रजाल) से
न्न हुआ हो तो यह मानना पड़ेगा कि स्मरण शक्तिके अनु-
र स्वप्न भी पहिलेकी देखी हुई वस्तुओंके रूपके तक हैं
र भ्रममें भी हम किसी वस्तुका भ्रम करते हैं। यहां तक कि
ात्मक ज्ञान सत्यज्ञानसे सदैव दूर हो सका है" (सि०
० फि० पृ० ४२७)।

गौतमका वचन है कि ज्ञानका संबंध मन और इंद्रियोंसे
ीं है सुतरां आत्मासे है। वह आवागमनके सिद्धांतको
ीकार करता है। और राग, द्वेष एवं मूढ़ताको प्रधान दोष
नता है। जिनमेंसे मूढ़ता निकृष्ट है। पुण्य पापके अभावमें
रीरसे जीव पृथक् हो सका है। गौतमके सिद्धांतमें ईश्वरको
ायथा गौणरूपमें है। उसकी सत्ताकी आवश्यका केवल
ावागमनमें पड़े हुए अनंत जीवोंको उनके कर्मोंका फल देनेके
िए है।

न्यायके तत्त्वोंमें ज्ञानके यथार्थ तत्त्व, जिनको हम धर्मको
ज्ञानिक खोजमें स्थापित कर चुके हैं, नहीं पाए जाते हैं और
ं उनमें मोक्षके स्वरूपका ही वर्णन है जो यथार्थ उद्देश्य है।

कणादका वैशेषिक दर्शन भी विशेषतया न्यायकी बहिन
है। उसमें कोई विशेष उल्लेखनीय बात नहीं है जो अन्य स्थान

रसे यह सिद्धान्त माननीय है यद्यपि उसके स्वीकार करनेमें
हद तक चेतावनी अवश्य करनी पड़ेगी । इसके विपरीत यह
और बात विशेष उल्लेखनीय है कि भारतमें महमूद गजनवीके
मलोंके और पश्चात्‌के अन्य मुसलमान बादशाहोंके आनेके
दके लगभग वर्तमान कालकी निस्बत बहुत ज्यादा योगी
महत्ता पार जाते थे । मैं इसको मान लेता हूं कि प्रारम्भिक
लमान आक्रमणकारियोंसे हिन्दुओंको हृदयसे ग्लानि थी । और
योगमें कोई नियम उनके विध्वंस करनेका होता तो मुस-
मानोंकी सफलता कभी नहीं होती । परन्तु योग उससमय हर
कार्यहीन हुआ ! उसके कुछ शताब्दियोंके पश्चात् जब कि
और सूअर दोनोंका मांस खानेवाले ईसाई लोग भारतवर्षमें
ए तब भी योगविद्या फलहीन रही ! और इससमय अकेले
ी दक्षिण मुसलमान दरवेशोंकी करामातोंके सामने ! मुझे
क इसका अनुभव बहुत कम है परन्तु जो कुछ मैंने स्वयं
ा है और इसके संबंधमें पढ़ा है उससे मैं इस निर्णय पर
ुंचा हूं कि मुसलमान फकीरोंके एक विशेष विभागको
[illegible] लोगोंके बाहर करनेके लिये कोई विशेष कारण
[illegible] नहीं होते हैं, परन्तु मैं इन शब्दोंके स्थानपर अन्य शब्द
[illegible] नहीं करना चाहता हूं [illegible] जिनसे अद्भुत
[illegible] और करामातोंका [illegible] अलौकिक विज्ञान नहीं है
[illegible] उन अवस्थामें जब उन्हें धनसे निश्चिन्त [illegible] कर

चंचलताको रोकनेका उपाय है। और बहुतसे
इसका रंचमात्र भी उल्लेख नहीं है। और
विशेष ध्यान नहीं दिया गया है (देखो ज्ञानार्णवमें
समाधि अतरंगसे संबंधित है और इच्छाओं एवं
निरोध करनेसे प्राप्त होती है। पतञ्जलि ऋषिने
भी वर्णन नहीं किया है जिससे शुद्ध
है। जिन महाशयोंको इस संबंधमें जाननेकी इच्छा
'की ग्रोफ नॉलेज' नामक पुस्तकके १३ वें
करना योग्य है कि जहांपर सम्पूर्ण विषय पूर्णरूपेण
अब मेरे पास इतना अवसर नहीं है कि मैं यहांपर
विषयका विस्तारसे वर्णन कर सकूं।

अब मैं 'योगदर्शन' के विशेष चित्ताकर्षक विषयमें
करता हूं जिसका संबंध अद्भुत शक्तियोंकी प्राप्तिसे है।
विचार है कि आपमेंसे कुछ महाशयोंको इस बातके
उत्कट इच्छा होगी कि देखें इस विषयपर
निर्णय क्या होता है ? परन्तु, महाशयो ! मैं कानूनका
और कानूनके ज्ञाताओंका चित्त स्वभावतः सुनी सुनाई
मानलेनेके विपरीत होता है । तब भी 'विभिन्न धर्म'
सिद्धान्तोंकी कथाओंका एक विशाल ढेर है जो निःसंदेह
बातको साबित करता है कि कुछ अद्भुत शक्तियां,
शीलता एवं तपस्याका जीवन व्यतीत करनेसे प्राप्त होती हैं।

इस बातको समझानेके लिए जैमिनि यह मानता है कि
क फल अर्थात् कोई अदृष्ट वस्तु या कर्मकी एक प्रकारकी
ध्यात् अवस्था अथवा फलकी एक अदृष्ट पूर्व अवस्था
। जो एक अनोखी अपूर्व अवस्था है और जो शुभ कर्मोंमें
विद्यमान् रहनेवाले फलको व्यक्त करती है और वह यह
ी कहता है कि यदि हम परमेश्वरको स्वयं पुण्य पापके
सुख दुःख देनेवाला मान भी लेवें तो हमको उसे विशेष
हर अत्याचार और पक्षपातका दोषी ठहराना पड़ेगा।
अस्तु; यह विशेष योग्य प्रतीत होता है कि यह मान लिया
जावे कि शुभ या अशुभ सब कर्म अपना अपना फल देते
हैं अथवा अन्य शब्दोंमें संसारके नैतिक प्रबंधके लिए किसी
ईश्वरकी आवश्यकता नहीं है (सि० सि० फि० पत्र २११)।
मोक्षमूलर कर्मोंकी स्वयं फलदायक व्याख्या पर विवेचन
ते हुए लिखते हैं कि:—

"......जैमिनि ईश्वरको संसारमें [illegible]
देनेसे नहीं ठहराता है और इसलिए प्रत्येक वस्तुको कारण
कार्यके सिद्धांत पर आधारित करता है और संसारकी
[illegible] अवस्थाओंको शुभ और अशुभ कर्मोंके फलका
[illegible] है [illegible] नहीं है
[illegible] और [illegible]
[illegible]

कार तप द्वारा पुराने कर्म्मोंका नाश करनेसे और नये कर्म्मोंके न करनेसे भविष्य जीवनकेलिए आस्रव नहीं होता। आस्रवके न होनेसे कर्म्मोंका नाश हो जाता है । और इस तरह पर पापका नाश हो जाता है । और इस प्रकार दुःखका विध्वंश हो जायगा । ऐ भाइयो ! निर्ग्रन्थ (जैनी) ऐसा कहते हैं......... मैंने उनसे पूछा कि क्या यह सत्य है कि इसको तुम मानते हो और इसका तुम प्रचार करते हो ?....... उन्होंने उत्तर दिया....... हमारे पथप्रदर्शक नातपुत्त सर्वज्ञ हैं. .... वह अपने ज्ञानकी गंभीरतासे यह बताते हैं: तुमने भूतकालमें अशुभ कर्म्म किए हैं। इसको तुम कठिन तपस्या और कठिनाइयोंको सहन करके नष्ट करदो। और जितना तुम मनसा वाचा कर्मणासे अपनी इच्छाओंको वशमें करोगे उतना ही अशुभ कर्म्मोंका अभाव होगा । ....इस प्रकार अंतमें समस्त कर्म नष्ट हो जांयगे और सर्व दुःख भी। इससे हम सहमत हैं।" (Majjhima ii, 214 cf. i, 238)* इ० हि० ऐ० जिल्द २ पत्र ७० ।

इस सहमतिके होते हुए भी जब परीषहजयकी कठिनाईका सामना पड़ा जिसका अर्थ सन्यासके संबंधमें सर्व प्रकारकी कठिनाइयोंको सहर्ष सहन करना है और जब उसने अपनेको दुर्बल और कमजोर पाया परन्तु वह ज्ञान प्राप्त न हुआ जिसकी वह खोजमें था तो बुद्धने ऐसा कहा.--

ना साधन किये हुए करना चाहता था। संभवतः उसने इस
कभी ध्यान नहीं दिया कि शिखर पर पहुंचनेके लिए सीढ़ी
आवश्यकता होती है। और यह कि तपस्यासे सिवाय दुःख
: क्लेशके और कुछ नहीं प्राप्त होता यदि वह सम्यग्दर्शन और
म्यग्ज्ञानके साथ न हो। इस प्रकार बुद्ध बड़ी अवस्था तक
मार्गका प्रचार करता रहा। और लोगोंको दुःखसे बचनेके
र निर्वाणकी शून्यतामें गर्त्त हो जानेका उपदेश देता रहा।
अस्सी वर्षकी अवस्थामें सूअरका मांस खानेके पश्चात् मृत्यु
प्राप्त हुवा।

द्धके उपदेशका प्रभाव बहुत लोगोंके हृदयों पर इस कारणसे
ा कि उसने कठिन तपस्या नहीं करनी पड़ती थी और उसने
योगकी कठिनाइयोंको भी, जो वास्तवमें एक व्यर्थ मार्ग
रीरिक क्लेशोंका है और जिसका तपस्याके यथार्थ स्वरूपोंसे
े जैनसिद्धान्तमें दिये हुए हैं पृथक् समझना आवश्यक है,
नका कर दिया था। परन्तु बुद्धसिद्धांतके विषयमें एवं उसके
ावागमनके मतके संबंधमें जिसमें कर्म्म करनेवालेके स्थान पर
र अन्य पुरुषको कर्म्मोंके फल रूप दुःख सुखको भोगना पड़ता
और उसकी मानी हुई आत्माओंकी अनित्यताकी बाबत हम
हे जो कुछ विचार करें वा कहें तो भी हमको उसकी समाधि
ावोंके दुःखको बहुत स्पष्टरूपमें जान लेनेके लिए और उस
खको शब्दोंमें अपूर्व योग्यतासे चित्रित करनेके लिए अवश्य

ग—वर्षा—अग्नि इत्यादि जैसे नैसर्गिक घटनाओं या विविध
आओं व शिल्पों जैसे शासनका ज्ञान भोजन बनानेकी विद्या
आदिके रूपक अर्थात् स्वरूपों किया (Personifications)
क्त है। परन्तु इन विद्वान जिज्ञासुओंमेंसे एकको भी वेदों,
पवित्र इन्जील या ज़िन्दावस्थाका भेद नहीं मिला। पूर्वीय
भाषाओंके ज्ञाता (Orientalist) विचार करते हैं कि
वेदोंमें कहे हुए सूर्य, इन्द्र और अग्निको सूर्य बादल और
आगका अलंकार मानना और पवित्र इन्जीलके नये और पुराने
अहद नामोंको ऐतिहासिक रीतिसे पढ़ना बस धर्मकी तहको
पहुंच जाना है। और वर्तमान समयके विद्वानोंने अपना एक
प्रकारका 'प्रशंसा' समाज स्थापित कर लिया है जिसका हर
एक सदस्य हर समय इस चिन्तामें लगा रहता है कि इस बात
को ज्ञात करे कि उनकी इस प्रकारके अन्वेषणोंकी शाबाशी
किसको दी जाये और इसको बिदून किसी निजी स्वार्थताके
ज़ाहिर कर दे। यदि मैं इन जिज्ञासुओंके धार्मिक अन्वेषण व
मालूमात पर थोड़ा भी विचार करूं तो उसके लिये कमसे कम
एक सहस्र पृष्ठोंकी पुस्तक लिखनेकी ज़रूरत होगी। यह बात
नहीं है कि वह लोग ठीक के साफ़ नहीं हैं या उनकी शिक्षा
[illegible] हैं [illegible] [illegible] इस
समय उनके [illegible] नहीं हैं परन्तु [illegible]
वह सबके सब बुद्धिकी-[illegible] हैं और [illegible]

असहमत-

पर उत्तमतासे प्रश्न करते हैं और निर्दुषित
को दूर करनेमें पर्याप्त योग्यता रखते हैं ५"
अधिकार और शासनकी आर्थिक अधिकार

"२-लाभदायक गुणोंवाली अजा दूध देती है ....
लिये पुष्टिकारक भोजन है । उसमेंसे उत्त
समय लाभदायक होता है जब कि वह
लोंकी भांति प्रस्तुत किया जावे।
पाकशास्त्रानुकूल तय्यार किया हो-"

अब आप एक ही दृष्टिमें देख सकते हैं कि उ
विशेष बातें यह है-

१-इसका धर्मसे कोई सम्बंध नहीं है-और
२-इसकी लेखनशैली पाठशालाके विद्यार्थीकी सी
कि किसी विद्याका आख्यान (वैज्ञानिक)

यह कहना आवश्यक नहीं है कि यह वेदके उन
जिसके एक भागका यह अनुवाद कहा जाता है, कोई
अर्थ नहीं है। यदि दुर्जनसंतोषार्थ यह मान लिया जावे
पवित्र वेदोंका उपहास नहीं होता तो भी यह कहना
पड़ेगा कि उसमें वेदोंकी कुछ तारीफ भी नहीं है
न हम हिन्दू सम्प्रदायकी ही जो वेदोंको स्वीकार

वेदोंके समझनेमें सनातनधर्मियोंने भी कुछ
शामिल नहीं की। उन्होंने अपने पूर्वजोंकी मुटियोंको

... "वेद स्वयम् अपना भाव प्रगट नहीं करते हैं और वह तब ही समझमें आ सक्ते हैं कि जब गुरु उस वस्त्रको जिससे वह ढके हैं उतार देता है और उन बादलोंको जो उनके आंतरिक प्रकाशको छिपाये हुये हैं, हटा देता है।"

अभाग्यवश स्वयम् जेकोलियेट हिंदुमतके समझनेमें असमर्थ रहा। यथार्थ उसको इस बातका ज्ञान जरूर हो गया था उसका भाव छिपा हुआ है। उसका दिमाग वर्तमान प्राकृतिक बातोंसे इतना भरा हुआ था कि उसमें आत्मिक ज्ञानके असली अर्थोंके लिये बहुत कम अवकाश था।

के-एन-अय्यर महोदय अपनी बहुमूल्य पुस्तक "दी पर्मनेन्ट हिस्ट्री ऑफ भारतवर्ष"में लिखते हैं कि "पवित्र शास्त्र समयके हिस्से नहीं बताते हैं। इनमें मनुष्योंके लिये अत्यंत उपकारी शिक्षा है। आत्मिक उन्नतिका वैज्ञानिक मार्ग इनमें इतिहास, भूगोल, नीति और राजनीति शासन सम्बंधी बातोंके ऊपर वर्णन किया गया है।"

वेदोंके समझनेके लिये वेदांगोंका जानना आवश्यक है। ... निरुक्त (शब्दका नियम) सबसे ज्यादा आवश्यक है ... ज्ञान बिना किसीको वेदोंका भावार्थ समझानेका अधिकार नहीं है। अपनी रची हुई महाभारतकी भूमिकामें के. एन. अय्यर ... लिखते हैं—

... मनुष्योंकी शिक्षा देनेके लिये एक समयके

तको अब लोग समझने लगे हैं कि इन्जीलमें जिस
ः और सब पुस्तकोंको निस्बत लोग बहुत कम
हैं, असंख्य ऐसी आयात लिखी हैं जिनको ऐसी
हून जो उनके असली भावको खोल सके, कोई नहीं
ा है। यह कुंजी कब्बालामें मिलेगी"। कब्बाला
विभाजित है जिमेट्रिया, नोटेरिकोन और तेमुर।
जिमेट्रिया शब्दोंके मूल्य पर निर्भर है और यह बताता
शब्द एक संख्याके होते हैं वह एकार्थवाची भी
ौर दो बहुत पेचदार हैं जैसे किसी शब्दके अक्षरोंको
शब्द मानकर उससे एक जुमला बनाना इत्यादि। मगर
नसे यहां पर कुछ सम्बंध नहीं है। यहूदियोंके गुप्त
इसमकारके अङ्कगणित या संख्या पर बहुत जोर
ा है। इबरानी भाषामें हिन्दुसे पृथक् नहीं हैं। हर एक
एक विशेष संख्या है जैसे अ = १, ब = २, ज = ३,
। इस संख्यापर यह नियम निर्भर है कि हर शब्द एक
ा परिमाण है और हर रकम एक शब्द। इस प्रकारकी
का शुमार उर्दू फ़ारसीमें भी है जिसको सामान्यतः अबजद
रा) कहते हैं। ज्ञात होता है कि यहूदियोंने अपनी पवित्र
में इसका बहुत प्रयोग किया है। इसप्रकार उनकी पवित्र
केवल रहस्योंका एक समूह है जिनका भाव उससमय ज्ञात
ा है, जब उनकी इबारतका गुप्त भाव प्रत्यक्ष हो जावे।

जाते हैं जो बहुत समयसे बराबर चले आये हैं इस छिपी हुई विद्याका बार २ उल्लेख इञ्जीलके नये अहदनामेमें मिलता है और उपनिषदोंमें और अन्य प्राचीन शास्त्रोंमें भी कि जिनमें उसके कतिपय छिपे हुये रहस्योंको सावधानीसे प्रकट किया गया है और इधर उधरके रहस्योंसे जो उसके प्राप्त हुये हैं, यह प्रत्यक्ष रीतिसे स्पष्ट है कि वह सब पुराने धर्म्मों और फिलासफी (दर्शनों) में वास्तवमें एक थी और यथार्थमें उन सबकी बुनियाद थी। ईसाइयोंकी क्रीतियाके आरम्भमें, जो एक गुप्त समाज Secret society की भांति थी इस मर्मविद्याकी बहुत सावधानीसे रक्षाकी जाती थी। और इस नियमानुसार कि बहुतसे बुलाये जाते हैं परंतु उनमेंसे चन्द ही चुने जाते हैं वह केवल उन्हींको सिखाई जाती थी जो उसकी शिक्षाके अधिकारी समझे जाते थे। राजनीतिकी धर्मविरुद्ध पालिसी और स्वार्थी पादरियोंकी चारित्र सम्बंधी निर्बलताओंके कारण आरम्भ होकी शताब्दियोंमें ईसाइयोंके समाजसे यह मर्मज्ञान जाता रहा। और उसके स्थानपर बादकी शताब्दियोंमें नये और पुराने अहद नामोंके शब्दोंकी जाहरी मृतशिक्षा, पर ईश्वरपूजनका एक अक्षरानुवर्ती नियम स्थापित किया गया। इस खयाल पर कि इन्जीलमें आकाशवालोंकी भांति मनुष्यके साथ ईश्वरके सम्बन्धके बनावका उल्लेख है उसके प्रति-

शताब्दीमें भी औरीजेनने जो इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनि-
अनुसार ईसाई समाजका सबसे प्रख्यात और प्रखर विद्व
गुप्त रहस्यकी रीतिको पवित्र इन्जीलकी शिक्षाकी तहतक
नेके लिए प्रयोग किया था। ओरीजेनको पूरा विश्वास था
नवीन और प्राचीन अहद नामोंमें एक अक्षर भी ऐसा नहीं
जो ईश्वरीय अर्थ और रहस्यसे रिक्त हो। वह प्रश्न
ता है:—

"परन्तु क्यों कर हम इस गुप्त विचारके साथ इन्जीलकी
ऐसी कहानियोंको सहमत कर सकते हैं जैसे 'लूत'का अपनी
पुत्रियोंसे एकान्तसेवी होना, इबराहीमका पहले अपनी एक
स्त्रीसे और बादको दूसरी स्त्रीसे व्यभिचार कराना, सूर्यके
निर्माण होनेके पूर्व तीन दिन और रातका होना। ऐसा कौन
निर्बुद्धि होगा जो यह मानले कि ईश्वरने एक साधारण
माली की भांति अदनके बगीचेमें पेड़ लगाये। अर्थात् वास्त-
वमें ऐसे पेड़ लगाये कि जिनको लोग देख सकें और स्पर्श
कर सकें और इनमेंसे एकको जीवनका और दूसरेको नेकी
व बदीके ज्ञानका पेड़ कायम किया, जिनके फलोंको मनुष्य
अपने प्राकृतिक अवयवोंसे चखा सकें। कौन इसको स्वीकार
कर सकता है कि ईश्वर इस बगीचेमें टहला करता था या
इसको कि आदम एक पेड़के नीचे छिप गया और आदम
ईश्वरके चेहरे (सामने) से भाग गया। बुद्धिमान पाठक

बच्चा होनेका उल्लेख नहीं करता है।......न ...
परस्पर सहमत होती हैं, मत्ती ईसूकी उत्पत्ति ...
सनसे ४ वर्ष पूर्व हिरोद्के समयमें निर्धारित ...
लूका उसको १० वर्ष पश्चात् नियत ...
ईस्वीमें। परन्तु आगे चलकर वह प्रतिपादन ...
तिबारय कैसरके राज्यके १५ वीं वर्ष (=२८ ई० ...
३० वर्षका था !......मरकस करामाती जन्मका ...
करता है। मत्ती और लूका यूसूको २ विविध
यूसुफ और दाऊदके वंशमें देते हैं।......परन्तु ...
से उत्पन्न होनेकी विरोधी है। यदि मरियम और ...
करामाती जन्मका ज्ञान होता तो वह जब मसीहने ...
अपने पिताके काममें संलग्न होनेका उल्लेख ...
(देखो लूकाकी इन्जील याब २ आयत ५०)
न होते। इन ३ जीवनचरित्र सम्बंधी इन्जीलोंमें ...
करामातें बहुत कुछ एक भांतिकी हैं परंतु जिन ...
उनका घटित होना वर्णन किया गया है वह बहुत ...
है.....सबसे बड़ी करामात लजरसका जिलाना केवल ...
की इन्जीलमें पाया जाता है। शेष करामातें......आ...
हैं (जैसे रोटियोंकी संख्याका बढ़ जाना, पानीको ...
कर देना इत्यादि)। जो पुरुष खास (मुख्य) ...
मौजूद थे उनके नाम दो इन्जीलोंमें पढ़से नहीं ...

० ३९६ के एक विद्वत्तापूर्ण निबन्धका कुछ अंश संक्षेप जिसमें कुछ विरोधोंका उल्लेख है आपके समक्ष प्रस्तुत है:—

'इन्जीलें परस्पर एक दूसरेका विरोध करती हैं। और यूहन्नाकी इन्जील शेष ३ इन्जीलोंसे इस कदर विरुद्ध है कि सब जिज्ञासुओंने इसमें और शेष सब इन्जीलोंमें जो जीवन चरित्रकी भांति लिखी हुई हैं विवेचन किया है.........इसके अतिरिक्त कि यूहन्ना मसीहका उल्लेख शेष ३ इन्जीलोंसे बहुत विरोधके साथ करता है यह ईसूके रात्रि भोजनका (Supper) उल्लेख नहीं करता है, वह ईसूकी मृत्युकी दूसरी तिथि नियत करता है, वह निस्तारपर्वको ३ ईदोंका उल्लेख करता है जब कि और लेखक केवल एकहीका करते हैं। और वह ईसूकी जीवनसम्बंधी सब घटनाएं एकस्थानमें होना बताता है जब कि औरके अनुसार ईसूके जीवनका अन्तिमभाग ही वहां व्यतीत हुआ। यूहन्नाकी इन्जीलमें जोन वपतिस्मा देनेवालेका अभिप्राय बहुत कम रह जाता है। उसमें करामातें हैं। अर्थात् वह ज्यादा आश्चर्यजनक हैं और साथ ही साथ वह गुप्त रहस्योंकी ओर संकेत करती हैं। ईसूका सब जीवन शेष तीनों इन्जीलोंसे बहुत ज्यादा है और 'लोगोस' (ईश्वर वाक्य) की भांति है। परन्तु साथ ही में ईसूको वह यौसुफका पुत्र बताता है और कुमारीके

मसीहके जी उठनेके निमित्त इनके लेखक एक दूसरेसे परस्पर विरोध रखते हैं। मरकसकी इन्जीलके १६ वें बाबकी ९ वींसे २०वीं आयतोंका लेख बादका बढ़ाया हुआ है। ......लूकाकी ऐतिहासिक कल्पनाएं झूठी हैं। हिरोद कभी बादशाह न था किन्तु गवरनर था। कुरेनियसको ईसूके इतिहाससे जा मिलाता है जो सन् ७ से ११ ईस्वी तक हाकिम था और इसलिये ईसूकी कहानीका उससे कोई सम्बंध नहीं है। वह लुसानियसका भी उल्लेख करता है यद्यपि वह ईसूके उत्पन्न होनेसे ३४ वर्ष पूर्व मृत हो चुका था......इन्जीलोंके लेखक जो दरियामें बपतिस्मा देनेका वर्णन करते हैं और विशेषतया यरदन नदीमें, जहां स्नान करना भी मना था, पैलस्तीनके व्यवहारोंसे परिचित न थे। लूकाकी इन्जीलमें दो महायाजकों कियाफा और हन्नसके एक ही समयमें मौजूद होनेका उल्लेख है जो असम्भव है। ईसूका हैकलके उस भागमें शिक्षा देना कहा गया है जो केवल बलिदानके लिये नियत था। व्याख्यान पूजामंदिरमें हुआ करता था इन्जीलोंमें बयानोंका यहूदियोंके रिवाजसे मुकाबला करनेपर आश्चर्यजनक विरोध पाये जाते हैं। धार्मिक पर्वोंके नियम कानूनी कार्रवाई नितांत मना थीं। इसलिये ईसूका मुकदमा निस्तारके पर्वके दिन नहीं हो सकता था। ऐसे समयों पर हथियार लेकर फिरना भी मना था।

क्या वही ईश्वर जो यूसूका पिता कहा जाता है, बोल रहा है ? यदि ऐसा है तो वह अपने पुत्रकी क्यों करता है ? और क्या यह वही 'खुदावन्द' है जिसे ईश्वर, मुसलमान अल्लाह और पारसी पूजते हैं। यदि ऐसा है तो उसने इनलोगोंको भी बता दिया कि उसके एक पुत्र है। इसलाम ईसाई धर्म बाद स्थापित हुआ था और कहा जाता है कि इस पर निर्भर है तो फिर इसका क्या कारण है कि ईश्वर पुत्र होनेसे इनकार किया। यहां पर गौरके लिये मसाला है। हम इन दोनों बातोंमेंसे एक न एक पर लिये बाध्य होते हैं कि या तो यूसूका आसमानी ईश्वर, मुसलमानोंका अल्लाह और अरदहतका अथवा इन सब धर्मोंकी पुस्तक ऐतिहासिक रूपमें गई हैं। सत्य यह है कि इन्जीलें स्वयम् है कि यह गुप्तभाषामें लिखी गई हैं जिसका भाव अत्यन्तावश्यक है। यूसूकी शिक्षा दृष्टांतों द्वारा जिनका भाव बार २ शिष्योंको समझाया जाता और वह प्रायः नहीं समझते थे (देखो मरकसकी - आयतें ३१-३२, लूकाकी इन्जील बाब १८ आयतें मरकसकी इन्जील बाब ६ आयत १०) यह भी कह ईसू स्वयं भी इसके पश्चात् अपने शिष्योंकी -

। यह कहना गलत नहीं है कि उस प्राचीन संसारमें
ीहके समयके पहले कोई शहर भी ऐसा नहीं था जिसमें
 या ज्यादह विविध धर्म्मोके मंदिर ऐसे मौजूद नहीं थे जो
सी न किसी खुदावन्दके मरने और जी उठनेकी परिपा-
को बडी धून धामसे सर्व साधारणमें धार्मिक न मनाते हों।"
त्थराके मंदिरोंमें तो ईसाई मतसे इस कदर सापेक्षता पाई
थी कि दोबारा जीवित होकर उठनेवाले खुदावन्दको
के खास शब्दोंमें अर्थात् "खुदाका परी जो संसारके
ा दूर करता है" कह कर बधाई दी जाती थी। निश्चय
व इस विचारको झूठा करता है कि नवीन अहदनामेका
 ईसू मसीह कोई ऐतिहासिक पुरुष था। और निसंदेह
डे आश्चर्य्यकी बात है कि ईश्वरने अपने पुत्रकी सत्ताको
ो पिछले या पहले पैगम्बर पर द्योतन नहीं किया।
पतया ऐसे पुत्रकी सत्ताको जैसे ईसू, जो संसारका मोक्ष
ा है। इसके विरुद्ध इशोयह नबी द्वारा ईश्वरने प्रत्यक्षरीतिसे
ो बताया था (देखो इन्जील इशोयह बाब ४३ आयत ११):—
"मैं और मैं ही ईश्वर हुं और मेरे सिवाय कोई मोक्ष दाता
नहीं है"।
इसका खंडन कभी नहीं हुआ किंतु इसका अनुमोदन
ज़की इन्जीलसे होता है देखो बाब ४ आयत ८।—
"एक अकेला है और कोई दूसरा नहीं है। हा उसके न
कोई बेटा है और न भाई है"।

के अभागी ज्ञाताओंने स्वयं अपनेको और अपने भक्तों
यायियों)को उस कुंजीके खोदेनेके कारण वंचित कर लिया
इसको हर एक स्थानपर इतिहास ही इतिहास दृष्टि पड़ता
अर्थात् यहोवाकी देवनिन्दक और मूर्तिपूजक वनी इसरा-
के साथ गाढ़ प्रेमका इतिहास या एक नवीन विज्ञापित
गये ईश्वरपुत्रकी जीवनीका इतिहास जिसने पापियोंको
दिलानेके लिये धारण किया। निरर्थक ही इन्जीलोंके लेखक
२ कर अपना गला दुखाते हैं कि जो पढ़े सो समझे
त्तोंको इन्जील बाब २४ आयत (१५) ऐसे विश्वासी इन
ने इतिहासके हैं कि इन इस आज्ञासे प्रभावित नहीं हो
ते हैं। इन्जीलकी पुस्तक प्रकाशित वाक्यमें भी ऐसा ही कहा
देखो बाब २ आयत ७ कि:—

"जिसके कान हों वह सुने कि आत्मा समाजोंसे क्या कहता
है। जो विजयी होगा मैं उसको जीवनके वृक्षमेंसे जो ईश्व-
रीय बागके मध्यमें है, खानेको दूंगा"।

मैं विनय करता हूं कि मिसालोंकी तादाद बढ़ाना निरर्थक
यह पर नितान्त स्पष्ट रीतिसे मानली गई है कि जो
एक ऐतिहासिक नहीं है वह इतिहास समझ कर पढ़ी गई है।
ल पर आप और वेरेका नाना हो जहां दोनों संदेहके और
कालीन कहे जाते हैं ऐतिहासिक भावके निषेध करनेका
त है। जैसा कि मैंने की ऑफ नालिज में कहा है। हमारे

जिसके ऊपर मल्लाहने आरम्भ ९
भाग्य निर्माण किया था जिसका हाल तो भी
ईसाईयोंको ज्ञात न था। शेष रिवायतोंमें कुरान
की कहानी याजूज माजूज भ्राताओंकी औ
अथवा रहस्य पूर्ण है। इस विषयमें कि यह सब
केवल किस्सोंकी भांति जैसे आदमकी अवज्ञा
आजकल कोई संदेह नहीं कर सकता है। स्वयं
एक फिर्का था कि जिसने निश्चय इस
कुरान शरीफका भाव केवल अलङ्काररूप है। जैसा
जि० ९ पृ० ८८१ में आया है:—

"इसलामी फिलासिफाका एक बड़ा प्रश्न यह
अपना सम्बंध कुरान और हदीसमें कहे हुए
रीतिसे स्थापन करे। बहुतसे मुसलमान विद्वान
आलंकारिक भाव (रीति)को यूनानियोंसे हासिल
और जो उपर्युक्त प्रश्नसे थोड़ी बहुत जानकारी
प्रयत्नमें संलग्न थे कि शराके मजमूनको
लायें। जिन लोगोंने इस नियमका पूरा २ प्रयत्न
यातनी (आभ्यन्तरिक) कहाते थे। उच्च कोटिके
और स्वतन्त्र विचारवाले (Free Thinkers)
भी एक ही परिणाम पर पहुंच गये। एक और
उन सबका आकार था यह था कि शब्दका अ

पलटी ही होनी चाहिये, प्रस्तुत है। परिणाम प्रत्यक्ष है।
को इस बातकी चिन्ता थी कि पढ़नेवाले उनके लेखोंको
सिक रीतिसे न पढ़लें, और उन्होंने ऐतिहासिक भावके
करनेमें कोई कसर न उठा रक्खी। नये अहदनामेकी
इस प्रकार जीव (=पूलु) की आत्मिक उन्नतिका वर्णन
है न कि एक व्यक्ति पूलुकी जीवनी और शिक्षाका,
ा कई लेखकोंने लिखा हो।

ातः हमारी सम्मति यह है कि हिन्दू शास्त्रोंकी भांति
हके विरोध भी या तो पुस्तकोंके लेखकोंने ऐतिहासिक
े निषेधके लिये इरादतन पैदा किये हैं या दृष्टान्तरूपी
ुरोंकी रचनामें स्वयं पैदा हो गये हैं। हम अभी देखेंगे
ह सम्मति केवल ठीक ही नहीं साबित होगी, प्रस्तुत
लकी शिक्षाको प्राचीन धर्मों और साथ ही साथ सत्य
निक शिक्षासे परस्पर सहमत करा देगी।

अब मैं इसलामकी ओर आता हूं जिसको आप मानते हैं
करीब १३ सौ वर्ष हुए कि एक महम्मद नामी व्यक्तिने
रका दावर्में इतिहाससे बहुत कुछ सम्बंध हो गया, स्थापित
ा था। इसलामका धर्मशास्त्र भी अलङ्कार रूपमें लिखित
। उसने विशेषतः इन्जीलके पुराने अहदनामेको इबारत
म्मलित है और इसके अतिरिक्त कुछ रिवायतें व हदीस
र भी है इसका विश्वास है कि—एक प्रारम्भको नहीं है

द् सत्यता केवल थोडे ही पुरुषोंको ज्ञात था चाहे वह
िय प्रकाश (मर्मज्ञ)से हो या अपने विचार (फिल-
या स्वतन्त्र विचारवाले) से"

यह भी सूचना हमें प्राप्त होती है कि अरस्तूके मुसल-
इस सम्मतिसे साधारणतया सहमत थे । उदाहरण
पर इबरुष्की यह सम्मति थी कि बुद्धि और ईमानमें
रण विरोधका नहीं हो सकता है । क्योंकि ईमानके
निस्संदेह फिलसफाके नियमोंके प्रतिरूप ही हैं जो
रूपमें वर्णन किये गये हैं (पूर्वकथित प्रमाण) ।
ं जो मान प्रारम्भके इसलामी प्रचारकोंके हृदयोंमें
फाके लिये था वह इस बातकी साक्षी है कि उनको इस
विश्वास था कि हदीसकी आयतोंमें और विज्ञानमें
एक वास्तविक आंतरिक मित्रता है । इस बातका प्रभाव
रिणाम पर नहीं पड़ता है कि मुसलमानोंका अत्याचार
शताब्दियोंमें ज्ञानके नाश होनेका बहुत कुछ कारण हुआ।
पैगम्बर साहबने हदीसमें बुद्धिकी बहुत सराहनाकी
र प्रतिपादन किया है "वह व्यक्ति मृत्युको नहीं प्राप्त
है जो अपने जीवनको ज्ञानोपार्जनमें लगाता है" (दि-
त आफ मोहम्मद) हज़रत अलीकी बावत जो यह कहा
है कि उन्होंने ऐसा आदेश किया है कि "फिलसफा
रकी खोई हुई भेड है । यदि तुम्हें उसको काफिरोंसे प्राप्त

देवताओंमें सबसे बड़े तीन हैं जो वास्तवमें एकहीमें
कित हो जाते हैं। यह तीन–सूर्य्य, इन्द्र और अग्नि हैं जिनके
व वर्तमानके लोगोंने बहुत त्रुटियां की है। इनकी असलीयत
लेनेके लिये धार्मिक विज्ञानके वह परिणाम जो हम
पिछले व्याख्यानमें दे चुके हैं, सरल योग्य हैं। उनको
तः मैं यहां पर कहूंगा जिससे प्रमाण देनेमें सरलता हो।
स प्रकार हैं–

१–आत्मा एक द्रव्य है जो सर्वज्ञताकी योग्यता रखता है।
ई वह सर्वज्ञ होता यदि वह उस अपवित्रताके मेलसे जो
साथ लगा हुआ है, पृथक् होता।

२–अपवित्र आत्मा इन्द्रियों द्वारा बाह्य संसारसे व्यापारमें
र है और आवागमनमें चक्कर खाता है।

३–तपस्या और इन्द्रियनिग्रह, परमात्मापन और पूर्णता
ामिके साधन हैं।

इनमें शब्दोंमें हर एक आत्मामें परमात्मा हो जानेकी योग्यता
ान है परन्तु यह जब तक पुद्गलसे वेष्टित है तब तक वह
ि जीव (अपवित्र अवस्थामें) ही है और तपस्या द्वारा
तासे निष्कृति हो सकती है। अन्य ३ बातें, जो मोक्षके
वालेको जाननी आवश्यक हैं वह यह हैं:—

–शुद्ध जीव द्रव्यका स्वरूप।

–जीवात्मा (अपवित्रात्मा)की दशा। और

स्थापित रहता है परन्तु बुद्धि समय २ पर प्रत्यक्ष
न होती रहती है जैसे सोनेमें उसका विलीन हो

जीवनके लिए शिक्षाका द्वार बुद्धि है चूंकि बाह्य
गुरु तो ज्ञानप्राप्तिके सहकारी कारण ही होते हैं,
रण नहीं।

बुद्धि सामान्यतः प्रकृतिसे सम्बंध रखती है और
जीवकी ओर आकर्षित होती है। उदाहरणस्वरूप
बुद्धिमत्ताको देखिये कि जिसको अभी तक आत्मा
ही नहीं लगा है। इसलिये जीव और प्रकृतिके समागम
रखनामें इंद्र (जीवात्मा) का अपने गुरु बुद्धि)—
(पुद्गल या प्रकृति)से भोग करना बांधा गया है।
फोड़े फुंसियां अज्ञानी जीव हैं जो प्रकृतिमें लिप्त होनेके
अपने वास्तविक स्वरूपसे अनभिज्ञ हैं। यह अज्ञानताके
बन्धन कर्म है।

परंतु जब उनको ब्रह्मज्ञान अर्थात् इस बातका ज्ञान कि
ही ब्रह्म है, हो जाता है, तो ऐसा होता है मानो उनकी
खुल गई। इसी बातको, महात्माओंने प्रार्थना पर कृपालु हो
पके चिन्ह फोड़े फुंसियोंको आंखोंमें परिवर्तित कर दिया
गया है।

चन्द्र अपने पिताके भी पिता हैं क्योंकि—

शक्तिका प्रयोग केवल इसके द्वारा होता है इसीले
शक्तियोंको अग्निके ७ हस्त माना है।

३—सात जबानें अग्निकी ५ इन्द्रियां, मन, ...
जिनको तपकी अग्निमें स्वाहा या भस्म करता है।

४—चूंकि तपस्या करनेसे आत्माके ईश्वरीय ...
मान होते हैं इसलिये अग्निको देवताओं (=ईश्वरीय ...
पुरोहित कहा गया है जो उसके आह्वानसे आते हैं।

५—पुण्य और पाप दोनों बंधन अर्थात्
कारण हैं जिनमेंसे पुण्यसे हृदयग्राही और पापसे ...
योनियां मिलती हैं। इन दोनोंको मुमुक्षको ...
(समाधि के लिये छोड़ना पड़ता है। इसलिये ...
(पुण्य) और अपवित्र (पाप) दोनोंका भक्षक ...
कहा है।

६—अग्निका भोजन इच्छायें हैं अर्थात् मनको ...
क्योंकि तपस्यासे भाव इच्छाओंके त्यागसे है। इच्छा ...
करनेसे आत्माके ईश्वरीय गुण और विशेषण प्रगट ...
हैं। अलंकारकी भाषामें इन ईश्वरीय गुणोंको देवता ...
इसलिये अग्नि पर (इच्छाओंका) बलिदान चढ़ानेसे ...
की पुष्टि होती है।

अग्निका यथा स्वरूप है जिसको आप जानते हैं, ...
हिन्दू ही नहीं प्रत्युत पारसी लोग भी पूजते हैं।

हाय

ार ७ जिव्हायें हैं।

: देवताओंका पुरोहित है जो उसके बुलानेसे आते हैं।

: भक्ष्य और अभक्ष्य अर्थात् पाक और नापाक दोनों

ला जाता है। और

: देवताओंको बल देता है। अर्थात् जिस कदरज्यादा

लिदान अग्नि पर चढाया जावे उतनी ही देवताओंको

ष्टि होती है।

त्यन्त सुन्दर विचारोंको विवेचना निम्न भांति हैः-

प तीन प्रकारसे होता है-अर्थात्

(क) मनको वशमें लाना

(ख) शरीरको वशमें लाना और

(ग) वचनको वशमें लाना

इनमेंसे केवल दोको ही वशमें लाया जावे तो तप अधूरा

और कोई चतुर्थ वस्तु वशमें लानेको नहीं है। अब

स्याके यह तीन आधार हैं इसलिये उसके तीन पग

है।

-सात हाथोंका भाव ७ ऋद्धियोंसे है। जो तपस्वियोंको

जाती हैं। मेरु देहमें जो ७ योगके चक्र हैं उनमेंसे हर

क प्रकारकी ऋद्धि (शक्ति) गुप्त रीतिसे सुसुप्त मानी

तपस्याचरणसे यह शक्तियां जाग्रत हो जाती हैं। चूंकि

मायको शास्त्रोंका प्रमाण देकर साबित किया
यद्यपि उसमें इन अलङ्काररूपी देवी देवताओंको
जिहाजुसे स्वयम् विवेचना करनेका प्रयत्न नहीं

ऐसा ज्ञात होता है कि किसी समयमें हिन्दुओंको
रूपक अलङ्कारोंकी सिद्ध हो गयी थी और वह
खयाली सृष्टिको आलङ्कारिक वस्त्रों और जेवर
आयापनसे संलग्न हो गये थे। एक शब्द भी इन
पुस्तकोंका इसलिये ऐतिहासिक रीति पर ठीक नहीं।
महाभारत और रामायणके काव्य ही ऐतिहासिक
उनके समय और स्थानोंके प्रमाण विज्ञानकी दृष्टि
बनावटी हैं जिनने कि वह व्यक्ति, जो उन समयों और
सम्बंध रखते हैं। वशिष्ठ ऋषि मनुष्य नहीं हैं किन्तु
ईश्वरीय वाणीका रूपक चिन्ह है जब कि विश्वामित्र
अनुकूल (विचार) है। उनके परस्पर झगड़ोंके
और मननके स्वाभाविक विरोधसे है जो गुप्त रहस्यमय
प्रायः पाया जाता है। परन्तु श्रुति अन्ततः बुद्धि पर
करती है और इसीलिये हम वशिष्ठको अपने
मित्र पर विजयी पाते हैं। १४ लोक आत्मिक
स्थान हैं समान गृहिका आय मनमें आत्मिक विकास
[illegible] है [illegible] आत्मिक उन्नतिमें है और
[illegible] [illegible] [illegible] है। इस प्रकार [illegible]

ो रचना (तरतीब) से स्पष्टतया निम्नलिखित भाव हैं:—

व्यक्ति अपनी सत्तामें ईश्वर है अर्थात् जीवात्मा ही परमात्मा है।

आत्मा पूर्ण परमात्मा होता है क्योंकि वह सर्वज्ञताके परमात्मापनका चिन्ह है, विशिष्ट होता है।

जीवका परमात्मापन उसके प्रकृति (पुद्गल) से संयुक्त होनेके कारण दबा हुआ है। और

तपस्या वह मार्ग है जो पूर्णता और परमात्मापनको पहुंचाता है।

इसप्रकार अवलोकन करते हैं कि वेदोंके देवी देवताओंमें जीवनके बाज क्लिष्ट प्रश्नोंको ही अलङ्कारकी ही प्रस्तुत किया गया है। यह मजमून बहुत रोचक है। मैं इस पर ज्यादा ठहर नहीं सका हूं आप इसका उल्लेख लेखी पुस्तक The Practical Path में विशेषतया और की ओफ नालिजमें भी, जिसमें विविध जातियोंके देवताओंके रहस्यका अनुसंधान पक्षपातरहित हो कर गया है। एक दूसरी पुस्तक, जिसका प्रमाण मैं इस में देना चाहता हूं The Permanent History of Varsha है जिसका इस व्याख्यानमे भी कई बार आया है। इसमें सैकड़ों देवी देवताओंके वास्तविक

भदन कहलाता था जहां किसी ईश्वर परमात्माने एक बाग सुन्दर वृक्षोंका लगाया हो । हमने (Origen) के लेखमें देखा है कि ऐसा विचार अनर्गल है । अगर आप उन दो विख्यात वृक्षोंर जीवन और नेकी व बदीके ज्ञानके पेड़ को जावे । उक्तविचारकी बेहूदगीको और भी हास्यास्पद नेकी व बदीका ज्ञान मनुष्योंके लिये क्यों वर्जित फलके केवल एक ही टुकड़ेके खानेकी सज़ा हो कि उसके खानेवालेको श्राप दिया जावे और निकाल दिया जावे, वह मृत्युके वशमें हो जावे लड़के पोते और सब आगामी औलाद अनित्य सदैवके लिये परेशानी और कष्टके भागी हों। देना अभीष्ट था (और सर्वज्ञ ईश्वरको पहलेसे कि आदम आज्ञाकारी न होगा) तो फिर पहलेका रांको मनुष्योंकी पथप्रदर्शकताकेलिये क्यों भेजता है इनको एक सज़ासे पवित्र नहीं कर सकता था उनको अपराधी बनाया । यदि आप इन प्रश्नों और स्थानपर जो इस रियायतके शाब्दिक भावसे गौर करते तो आप ओरिजिन (Origen) की सहमत होते कि यह शिक्षा ऐतिहासिक रूपमें नहीं सकती है । वैदिक देवमालाकी भांति इसका भाव है

बुद्धि है जो मनके आत्मिक अंधकारको हटाकर उसमें त्मिक सृष्टिकी रचना करती है। विष्णु जो रक्षा करने है, धर्म है, जिससे पुण्यकी वृद्धि होती है। वह केवल ी सृष्टिकी रक्षा करता है किन्तु और किसी वस्तुकी नहीं, । शिव या महेशसे भाव वैराग्यसे है जो कर्म—पुण्य पाप दोनोंका नाश करता है । दूसरी दृष्टिसे ऋषभ धर्म ऋषभका पुत्र भरत भक्ति, और बैल धर्मका चिन्ह या न है। जम्बूद्वीप मानवजातिका भक्तिभाव है और भारतवर्ष के नियम और रीति है । कुरुक्षेत्र दोनों भावोंके मध्यका है। प्रयागसे भाव हृदयसे है । मथुरा खोपडीका सहस्रार है और गोवरधन मन है । हरिद्वार कषायरहित शांतिका द्व है। गङ्गा यमुना और सरस्वती, इडा पिङ्गला और षुम्ना नाड़ियां है । युग तपस्याके दर्जे है । और मानुषिक ोर दक्ष पर्व या साल है प्रांतोंका भाव धर्म मार्गके स्थानोंसे जिनसे गुजरकर परमात्मापद प्राप्त होता है।

मैं विचार करता हूं कि आपको हिन्दूओंकी देवमालाकी ऐतिहासिकताका ज्ञान करानेकेलिये इतना लिखना पर्याप्त होगा। मैं धार्मिक एतमके मामलेको सुलझानेका प्रयत्न करूंगा जो ... और इतर धर्मोंका बड़ा मार्ग मसला है। सबके ... यह विचार अपने मनसे निकाल डालना चाहिये ... इस संसारमें ... पर ... ऐसा स्थान या जो

मापके समव इस किस्सेके वास्तविक रहस्यको प्रस्तुत हैं:—

वाग अदन जीवके गुणोंका अलङ्कार है । अर्थात् इसमें जीवको वाग और गुणोंको पेड़ोंसे ताबीर किया गया है। पेड़ोंमें जीवन और नेकी व बदीके बोधके पेड़ दो मुख्य हैं। अत एव वह बागके मध्यमें पाये जाते हैं।

आदमसे भाव उस जीवसे है जिसने मनुष्यकी योनि पाई है अर्थात् जो मानुषिक योनिमें है ।

हव्वासे भाव बुद्धिका है जो आदमके सोनेके समय आदमकी पसलीसे बनाई गई है। वह एक युक्तियुक्त अलंकार है क्योंकि अन्ततः बुद्धि तो जीवका ही गुण है। जिसको नीन्दसे जागने पर मनुष्य अपने पास पाता है।

) सब प्राणियोंमें केवल मनुष्य ही मोक्षप्राप्ति कर सकता है और इसलिये धार्मिक शिक्षाका वही अधिकारी है। पशुओंको बुद्धिकी कमी और शारीरिक तथा मानसिक न्यूनतायें मोक्षमें बाधक होती हैं। स्वर्ग और नर्कके निवासी भी तपस्यासे वंचित रहनेके कारण मोक्ष नहीं प्राप्त कर सके हैं । अतः मनुष्य ही केवल धार्मिक शिक्षाका अधिकारी है।

.) जीवन वृक्षका भाव जीवनसे है और नेकी व बदीके ज्ञान का अर्थ संसारकी वस्तुओंका भोगरूपी मूल्य परि[illegible] है ।

राग और द्वेष इच्छाकी दो साधारण किस्में हैं (रोचक वस्तुको अपनानेकी इच्छा = राग और बुरी वस्तुके नाश करनेकी इच्छा = द्वेष)। और इच्छा ही कर्म बंधान और आवागमनका कारण है जैसा कि पहले एक व्याख्यानमें बतलाया गया है अतः नेकी और बदी रूप ज्ञानका फल राग व द्वेष माना है।

जीव इस कारण कि वह एक असंयुक्त द्रव्य है अविनाशी है। परन्तु शरीरी होनेके कारण जीवन और मृत्यु उसके साथ लगे हुये हैं। इसी कारण इन्जीलमें आया है (देखो पैदायशकी किताब वाब २ आयत १७) कि 'जिस दिन तू उसका फल खावेगा तो निस्संदेह मर जायेगा'।

यह स्मरण रखना चाहिये कि आदम उसीदिन नहीं मरगया जिस दिन कि उसने नेकी और वदीका ज्ञान रूपी फल खाया बल्कि उसके पश्चात् बहुत वर्षोंतक जीवित रहा और ९३० वर्ष का होकर मरा (किताब पैदायश बाब ५ आयत ५) अतः पैदायशकी किताबके दूसरे बाबकी १७ वीं आयतका असली भाव यही हो सक्ता है कि वर्जित फलके खानेसे मनुष्यको मृत्यु पराजय करलेती है।

सांपका भाव इच्छासे है, जिसके द्वारा बुराईकी शिक्षा मिली। यह जीवको धर्मसे हटाकर बुरे कामोंकी ओर खींच लेती है।